



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 141]

नई दिल्ली, मुधवार, जून 30, 2004/आषाढ़ 9, 1926

No. 141]

NEW DELHI, WEDNESDAY, JUNE 30, 2004/ASADHA 9, 1926

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(पाटन-रोधी तथा सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 जून, 2004

विषय : नाइलोन टायर कोर्ड फैब्रिक (एनटीसीएफ) के आयात या चीन जनवादी गणराज्य से निर्यात करने के फलस्वरूप पाटन-रोधी जांच—प्रारम्भिक निष्कर्ष

संख्या 14/20/2003-डीजीएडी.—सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटिल अस्कूलों पर पाटन-रोधी शुल्क की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क आकलन और संग्रहण तथा ज्ञति निर्धारण) नियमाकाली, 1995 को ज्ञान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया

- i. जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाती है :
  - उपर्युक्त नियमों के अन्तर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसमें इसके पश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को एसोसिएशन के सभी सदस्यों की ओर से सिंथेटिक फाइबर उद्योग एसोसिएशन से इस आशय का लिखित आवेदन प्राप्त हुआ हो जिसमें चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित या नायलॉन टायर बोर्ड फैब्रिक का तथाकथित पाटन किया गया है।
  - आवेदन की प्रारम्भिक जांच में कुछ कमियां पाई गई थीं जिन्हें आवेदक ने बाद में ठीक कर दिया था। इसके पश्चात् आवेदन को उपर्युक्त दस्तावेज के रूप में विद्यार्थी स्वीकार कर लिया गया था।
  - आवेदक द्वारा पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए जाने के फलस्वरूप प्राधिकारी ने आयातित नायलॉन टायर कोर्ड फैब्रिक या चीन जनवादी गणराज्य से इसका निर्यात होने की स्थिति में इनके तथाकथित पाटन की जांच करने का निश्चय किया है।

- iv. नियमों के उप नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले प्राधिकारी तथाकथित पाटन की सूचना के बारे में उस देश के दूतावास को अधिसूचित करेगा।
- v. प्राधिकारी द्वारा 29 अक्टूबर 2003 को भारत के असाधारण राजपत्र में एक सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की गई जिसमें अध्याय 59, सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के उपशीष 5902.10.00 के अन्तर्गत श्रेणीबद्द नायलॉन टायर कोर्ड फैब्रिक के आयात या चीन जनवादी गणराज्य से इसके निर्यात के फलस्वरूप इसकी पाटन—रोधी जांच शुरू किए जाने के बारे में जानकारी दी गई।
- vi. नायलॉन टायर कोर्ड फैब्रिक के निर्यातकों/आयातकों (जिनके विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध करा दिए गए थे) को भी सार्वजनिक सूचना की एक प्रति अग्रेषित की गई जिससे वे इस सूचना के जारी किए जाने की तारीख से थालीस दिनों के अन्दर अपने विचार दे सके।
- vii. केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड से नायलॉन टायर कोर्ड फैब्रिक के आयातों के विवरण देने का भी अनुरोध किया गया। डीजीसीआईएस, कोलकाता से भी भी अनुरोध किया गया कि वे जांच अवधि के दौरान उक्त वस्तुओं का भारत में किए गए आयात के लेनदेन वार विवरण मुहैया कराएं और इसके साथ साथ प्रथिष्ठियों की संख्या के बिल, इंस वस्तुओं के निर्माता देश, आयातित वस्तुओं का विवरण, आयात की मात्रा और मूल्य और निर्यातक और आयातक के नाम और पतों की सूचना भी है।
- viii. प्राधिकारी नियम 6(3) के अनुसार जानकारी वाले निर्यातकों और चीन के दूतावास को आवेदन के अंगोपनीय पाठ की प्रतियां भी मुहैया कराएंगा।
- ix. नियम 6(4) के अनुसार प्राधिकारी जानकारी वाले चीन के निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजेगा जिससे उपयुक्त सूचना प्राप्त की जा सके;

#### चीन जनवादी गणराज्य

- निगंबो नायलॉन कम्पनी लिमिटेड  
जिनलुन ग्रुप ऑफिस बिल्डिंग, जोंगम स्ट्रीट, सिक्सी सिटी,  
जीजीयांग प्रोविन्स, चीन जनवादी गणराज्य
- बेलिंग पेट्रोकेमिकल्स,  
योगशन पेट्रोकेमिकल्स वर्क्स  
यूजांग हूनान
- नियांग सू स्टीड  
जियांगसू जूनमा ग्रुप  
जांग जीयांगेग हुआयू केमिकल्स कम्पनी लि.  
80-रिवर इस्ट रोड,  
चैनहंग टाऊन,  
जांगची योगैंग सिटी

- विंगदेव टेक्सटाइल मिल्स  
22 है-एन रोड,  
विंग देव
  - बैजंड ग्रेट ड्रेगम  
केमिकल फैब्रिकेस लि.  
वैनम रोड, एनव्यू शैनजांग प्रोविन्स  
चीन जनवादी गणराज्य
  - जेंगसू कनफा केमिकल्स कम्पनी लि.  
3, तैपांग वैल्यु जैगजू प्रोविन्स  
चीन जनवादी गणराज्य
- x. भारत में चीन के दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू किए जाने के बारे में भी सूचित किया गया और यह अनुरोध भी किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को इस संबंध में उत्तर देने का परामर्श दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति भी दी गई और इसके साथ उन्हें निर्यातकों के पते भी दिए गए।
- xi. मार्किट एकोनॉमी ट्रीटमेंट प्रदान करने के लिए प्रश्नावली जानकारी वाले सभी निर्यातकों तथा चीन के दूतावास को अग्रेषित की गई। यद्यपि शुरू किए जाने के प्रयोजन से चीन जनवादी गणराज्य में सामान्य कीमत का आधास चीन में वस्तुओं के उत्पादन की निर्मित लागत है तथापि प्राधिकारी ने जानकारी वाले निर्यातकों को बताया कि आवेदक के दावों की जांच तथा संशोधित पाटन-रोधी नियमों के अनुबन्ध-II के पैरा (7) और (8) को ध्यान में रखकर की जाएगी। चीन से इन वस्तुओं के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों को यह अनुरोध भी किया गया कि वे पैराग्राफ 8 के पैरा (3) में उल्लिखित पर्याप्त साक्ष्यों के साथ आवश्यक सूचना भिजवाएं जिससे निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात का पता लगा सके कि क्या मार्किट एकोनॉमी ट्रीटमेंट ऐसे सहयोग करने वाले निर्यातकों/उत्पादकों को दी जा सकती है जो उक्त पैराग्राफ में निर्धारित प्रक्रिया को संतोषजनक मानते हैं। इस संबंध में मार्किट एकोनॉमी ट्रीटमेंट प्रदान करने के लिए एक प्रश्नावली जानकारी वाले निर्यातकों तथा चीन के दूतावास को भिजवा दी गई है।
- xii. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगवाने के लिए नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक जानकारी वाले निर्यातकों/उपयोगकर्ता को एक प्रश्नावली भेज दी गई है:
- आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरिंग ऐसोसिएशन
  - बिडला टायर्स, कोलकाता-700019
  - सियट लि., मुम्बई-400018
  - उनलप इंडिया लि., कोलकाता-700016
  - जे के इंडस्ट्रीज लि., नई दिल्ली - 110002
  - एमआरएफ लि., थैनई - 600006
  - विक्रांत टायर्स लि., मैसूर - 570002

- xiii. प्राधिकारी ने विभिन्न हित रखने वाले पक्षकारों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय पाठों की एक पब्लिक फाइल हित रखने वाले पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए रखी है।
- xiv. उत्पादन की अधिकतम लागत निकालने के लिए लागत की जांच की गई और आवेदक द्वारा दी गई सूचना से सामान्यतः स्वीकार्य लेखा पद्धतियों के आधार पर भारत में इन वस्तुओं की विनिर्माण और बिक्री लागत निकाली गई जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि पाटन—रोधी शुल्क कम हो तो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए पाटन मार्जिन पर्याप्त हो।
- xv. \*\*\* इस अधिसूचना में हित रखने वाले पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना गोपनीय आधार पर है और इसे प्राधिकारी द्वारा सन्तोषजनक पाया गया है और यह नियमों के अन्तर्गत गोपनीय रहेगी।
- xvi. पहली अप्रैल 2002 से 30 जून 2003 (15 माह) तक की शामिल अवधि की पाटन और क्षति की जांच की गई है जिसका उल्लेख 'जांच की अवधि' या 'पीओआई' के रूप में किया गया है। 1999–2000 से जांच की अवधि तक (क्षति विश्लेषण अवधि) के वर्षों में शामिल क्षति विश्लेषण जांच की प्रवृत्ति के लिए उपयुक्त है।

#### **ख. विचाराधीन उत्पादन**

2. मौजूदा मामले में विचाराधीन उत्पाद नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक है जो चीन जनवादी गणराज्य में तैयार किया गया था और वहां से निर्यात किया गया है। ये वस्तुएं नायलोन फैब्रिक की हैं जिनका इस्तेमाल सामान्यतः टायर कोर्ड के लिए किया जाता है। नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक का अनुप्रयोग विभिन्न प्रकार के आटोमोटिव टायरों जैसे बस और ट्रकों के टायर, दो पहिया वाहनों के टायर, साइकल टायरों, लाइट कर्मिशियल वहिकल टायर, पशुओं द्वारा चलाई जाने वाली गाड़ियों आदि के टायरों के लिए किया जाता है।
3. नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक का विनिर्माण यार्न के विभिन्न डिनायर्स के प्रयोग से किया जाता है। इस फैब्रिक का प्रयोग टायरों के प्रबलन के लिए किया जाता है। उत्पाद की बिक्री 'ग्रे फैब्रिक' और 'डिप्ड फैब्रिक' के रूप में की जाती है। भारतीय टायर उद्योग ग्रे और डिप्ड फैब्रिक के दोनों ही रूपों में खरीद करता है। इन दोनों ही श्रेणियों के नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक का टैरिफ वर्गीकरण एक समान है। एमटीसीएफ की सभी किस्में उत्पादन कार्य क्षेत्र में हैं और विचाराधीन है और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 59, सीमाशुल्क उपशीर्ष 59.02.10.00 के अन्तर्गत वर्गीकृत है। हालांकि वर्गीकरण केवल निर्देशात्मक है और किसी भी स्थिति में पर मौजूदा जांच के कार्यक्षेत्र में बाध्यकारी नहीं है।

#### **ग. समान वस्तुएं**

4. विचाराधीन उत्पाद में उक्त पैरा ख में दिए गए कार्यक्षेत्र में आने वाली सभी प्रकार की वस्तुएं शामिल हैं। घरेलू उद्योग भी जैसाकि उनके आवेदन में उल्लेख किया गया है और ग्रे और डिप्ड एनटीसीएफ उत्पादों के अतिरिक्त बहुत थोड़ी मात्रा में साईकिल टायर कोर्ड का विनिर्माण करता है। हितबद्ध

पक्षकारों ने अपने आवेदन के अगोपनीय पाठ में यह उल्लेख किया है कि घरेलू उद्योग के पास एनटीसीएफ की विभिन्न किस्मों के आंकड़े उपलब्ध हैं जैसेकि ग्रे, डिप्ड और सीटीसी। पीओआई के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा विषयगत वस्तुओं के कुल उत्पादन में से घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित सीटीसी फैब्रिक की मात्रा 1.22 प्रतिशत थी। यद्यपि उक्त उल्लिखित वस्तुओं का क्षति विश्लेषण किया गया है तथापि एनटीसीएफ उत्पाद के संबंध में पाटन, क्षति और आकस्मिक लिंक के अन्तिम विश्लेषण विचाराधीन है।

5. घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित वस्तुओं जैसा ही है और इसकी तकनीक विनिर्देश, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्यकलाप और उपयोग और टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं पर प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है।
6. प्राधिकारी ने यह भी प्राया है कि इसमें विवाद का कोई तर्क नहीं है कि घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित एनटीसीएफ की विशेषताएं आयातित सामग्री से निकट से मेल खाती हैं और वाणिज्यिक और तकनीकी दोनों ही दृष्टियों से चीन जनवादी गणराज्य से आयातित एनटीसीएफ द्वारा प्रतिस्थापित की जा सकती है। घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित एनटीसीएफ को नियम 2(घ) के अर्थों के अन्तर्गत चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित उत्पाद जैसा माना जा सकता है।

#### घ. घरेलू उद्योग

7. नई दिल्ली स्थित सिंथेटिक फाइबर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने मैसर्स एसआरएफ लि. चैन्नई, मैसर्स एनआरसी लि., मुम्बई, मैसर्स सैंचुरी इंको लि., पुणे और मैसर्स निलॉन लि., मुम्बई की ओर से एक याचिका दायर की गई है जो भारत में एनटीसीएफ के निर्माता हैं और एसोसिएशन के सदस्य हैं।
8. घरेलू उत्पादकों द्वारा निर्मित वस्तुओं की मात्रा का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :—

|                             | 1999-2000    | 2000-01      | 3001-02      | पीओआई        | पीओआई (वार्षिक) |
|-----------------------------|--------------|--------------|--------------|--------------|-----------------|
| <b>उत्पादन (मैट्रिक टन)</b> |              |              |              |              |                 |
| ग्रे                        | 41015        | 38690        | 42352        | 61620        | 49296           |
| डिप्ड                       | 4229         | 2644         | 4478         | 9528         | 7622            |
| सीटीसी                      | 744          | 728          | 648          | 877          | 702             |
| <b>जोड़ उत्पादन</b>         | <b>45988</b> | <b>42062</b> | <b>47478</b> | <b>72025</b> | <b>57620</b>    |

9. आवेदक देश में विषयगत वस्तुओं का कुल घरेलू उत्पादन 100 प्रतिशत कर सकते हैं इसलिए मौजूदा याचिका को दायर करना उचित समझते हैं।
10. इसलिए प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि आवेदक 'घरेलू उद्योग' स्थापित कर सकते हैं और उन्हें नियमों के अन्तर्गत मौजूदा याचिका दायर करने की अपक्षित जानकारी है।

**छ. सूचना प्रस्तुत करना**

11. इन जांचों पर कार्रवाई शुरू किए जाने की अधिसूचना के पश्चात् हित वाले पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्क को इन निष्कर्षों में उस स्तर तक दर्शाया गया है जिस स्तर तक इन जांचों को संगत समझा गया है।
12. आवेदकों ने अपने आवेदन तथा इसके बाद दिए गए आवेदनों में निम्नलिखित मुख्य विषय उठाए हैं :—
  - i. भारत में मैसर्स एसआरएफ लि., मैसर्स एनआरसी लि., मैसर्स सैंचुरी ईका लि., मैसर्स निर्लोन लि. इन वस्तुओं (एनटीसीएफ) के विनिर्माता हैं और जो एसोसिएशन के सदस्य हैं और जिन्होंने आवेदन को विशेष रूप से अनुसमर्थन दिया है।
  - ii. आवेदकों ने यह उल्लेख किया है कि इस उत्पाद की कोई सक्षम प्रतिस्थापन नहीं है।
  - iii. आवेदक यह मानते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य के निर्यातकों और विनिर्माताओं ने इन वस्तुओं का पाटन किया हुआ है।
  - iv. विषयगत देश पिछले कुछ समय से (चार वर्षों से अधिक) इन उत्पादों का निर्यात कर रहा है। परन्तु निर्यातकों ने कहा है कि निर्यात मूल्यों में लगातार हो रही कमी के फलस्वरूप 2000–01 से इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अन्य स्रोतों पर पहले पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने के कारण पाटन कार्यों में तेजी आई।
  - v: डिप्ड फैब्रिक और ग्रे फैब्रिक दोनों का चीन उत्पादक और निर्यातक है। डिप्ड फैब्रिक और ग्रे फैब्रिक के बीच मूल्यों में अन्तर 15 से 20 प्रतिशंत अधिक है। ऐसी स्थिति में चीन से एनटीसीएफ के डिप्ड और ग्रे निर्यात के औसत आधार पर कुल भिला कर सूचना किसी भी स्थिति में उपयुक्त नहीं होगी और निर्यात मूल्यों का सही पता लगाने के लिए उपयोगी नहीं होगी। टायर के मुख्य भाग में ग्रे और डिप्ड फैब्रिक के प्रयोग होने के अतिरिक्त चीन साईकिल टायर कोर्ड फैब्रिक का निर्यात भी कर रहा है। इस फैब्रिक का निर्माण सामान्यतः 840 डी/1 है और इस फैब्रिक के उत्पादन की लागत टायरों की अन्य श्रेणियों के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले फैब्रिक की तुलना में अधिक होती है और फैब्रिक के मूल्य सामान्यतः अन्य भारी शुल्क टायर कोर्ड अनुप्रयोगों की फैब्रिक से कहीं अधिक होते हैं।
  - vi. आवेदक कम्पनियां मुख्यतः विषयगत वस्तुओं की दो किस्मों का निर्माण करती है अर्थात् ग्रे एनटीसीएफ और डिप्ड एनटीसीएफ, मैसर्स एसआरएस मैन्युफैक्चरर सीटीसी फैब्रिक। इसके अतिरिक्त उत्पाद को अनेक डेनियर्स में निर्मित किया जाता है। विषयगत वस्तुओं को विभिन्न फार्म्स में तैयार किया जाता है जिससे ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। विभिन्न डेनिएरेज/फार्म पर ध्यान दिए बिना उत्पाद में—
    - अनिवार्य रूप से इसी प्रकार की उत्पाद विशेषताएं होनी चाहिए,

- उसी प्रकार की उत्पदन प्रक्रिया और कच्ची सामग्री से उत्पाद निर्मित होना चाहिए और
  - एकल सीमाशुल्क टैरिफ़ कोड के अन्तर्गत श्रेणीबद्ध होना चाहिए।
- विषयगत वस्तुओं की यह सभी विभिन्न वस्तुएं मौजूदा जांच के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत हैं।
- vii. चीन जनवादी गणराज्य से निर्यातित विषयगत वस्तुओं (एनटीसीएफ) में और आवेदक कम्पनियों द्वारा तैयार की गई वस्तुओं में कोई जाना माना अन्तर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा विभिन्न ग्रेडों में तैयार की गई विषयगत वस्तुओं में और चीन जनवादी गणराज्य से आयातित वस्तुओं में आवश्यक उत्पाद विशेषताओं जैसाकि भौतिक और रसायनिक विशेषताएं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यकलाप और उपयोग, उत्पाद विनिर्देश, मूल्य वितरण और मार्किटिंग और विषयगत वस्तुओं का टैरिफ़ वर्गीकरण को देखते हुए तुलना की जा सकती है। उपभोगता इसे परस्पर बदल कर उपयोग कर सकते हैं और कर रहे हैं। आयातित और घरेलू विषयगत वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक दृष्टि से प्रतिस्थापित की जा सकती है। आवेदक का यह कहना है कि आवेदक कम्पनियों द्वारा तैयार की गई विषयगत वस्तुएं और चीन जनवादी गणराज्य से आयातित विषयगत वस्तुएं पाठन रोधी नियमों के अर्थों के अन्तर्गत एक जैसी है।
- viii. आवेदक कम्पनियों द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी और चीन जनवादी गणराज्य के विनिर्माताओं की प्रौद्योगिकी में कोई जाना माना अन्तर नहीं है। घरेलू उद्योग की उत्पादन प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया तथा चीन गणराज्य के निर्यातकों के बीच तुलना की जा सकती है चाहे प्रत्येक विनिर्माता ने उपलब्ध सुविधाओं और आवश्यकताओं के अनुसार अपनी उत्पादन प्रक्रिया को बढ़ाया बनाया है।
- ix. घरेलू उद्योग में पहले से दर्शाई गई सामग्री क्षति के अतिरिक्त चीन से होने वाला निर्यात घरेलू उद्योग के लिए सामग्री क्षति के रूप में खतरा है।
- क) आयात की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है (पिछले वर्ष की तुलना में प्रस्तावित पीओआई में आयात में तीन गुणी वृद्धि हुई है)। भारतीय उत्पादकों द्वारा अपनी सामग्री की बिक्री के लिए अच्छे प्रयास किए जाने के बावजूद आयात में यह वृद्धि हुई है। इस प्रकार यह वृद्धि अधिक हुई होती यदि घरेलू उद्योग समान कीमतों पर उत्पाद देने के लिए प्रयास नहीं करते।
- ख) मूल्य कम करना उल्लेखनीय है।
- ग) विषयगत देश में उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमता घरेलू मांग से कहीं अधिक है। वास्तव में इन उत्पादकों के पास अतिरिक्त क्षमता है।
- घ) यद्यपि सूचियों को कम करने के भारतीय उत्पादकों के संकेद्रित प्रयासों के फलस्वरूप घरेलू उद्योग वस्तुओं की सूची में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं कर सका है तथापि भारतीय उत्पादक यह जानते हैं कि विषयगत देश के उत्पादक अत्यधिक सूचियों से जूझ रहे हैं।

ड) आवेदकों ने चीन जनवादी गणराज्य द्वारा समूचे विश्व में एनटीसीएफ के निर्यात के विस्तृत विश्लेषण किए हैं। इस संबंध में निम्नलिखित संगत है :—

- चीन से समूचे विश्व में एनटीसीएफ के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जो नीचे दी गई सूचना से देखा जा सकता है।

|         |   |                  |
|---------|---|------------------|
| 2000-01 | = | 15000 मैट्रिक टन |
| 2001-02 | = | 16000 "          |
| 2002-03 | = | 25000 "          |

- पहले चीन इस उत्पाद को मुख्यतः थाईलैंड में ही निर्यात करता था, परन्तु अब इस का रुख भारत की ओर हुआ है। भारत में इसका निर्यात मात्रा की दृष्टि से अधिक है।
- भारत में विषयगत वस्तुओं का चीन का निर्यात मूल्य वास्तव में सबसे कम था। यद्यपि चीन समूचे विश्व में जिस औसत मूल्य पर निर्यात कर रहा है वह 2.77 अमरीकी डालर प्रति किलोग्राम था तथापि भारत में किए गए निर्यात की औसत कीमत 2.31 अमरीकी डालर प्रति किलोग्राम थी। पिछले वर्ष में भी यही प्रवृत्ति थी जो नीचे दी गई तालिका से देखी जा सकती है:

| चीन का निर्यात<br>एनटीसीएफ मूल्य<br>(अमरीकी डालर प्रति किलोग्राम) | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
|---|---------|---------|---------|
| भारत सहित विश्व औसत   | 3.24    | 2.97    | 2.77    |
| भारत में निर्यात मूल्य  | 3.15    | 2.86    | 2.31    |
| मूल्य में अन्तर   | 0.09    | 0.11    | 0.46    |

- यह देखा जा सकता है कि भारत में किए गए निर्यात के मूल्य में और शेष विश्व को किए गए निर्यात मूल्य में हमेशा अन्तर रहा है और मूल्य में यह अन्तर बढ़ा है। उपर्युक्त परिस्थितियों में क्षति अनुमान मात्र या इसकी न के बराबर सम्भावना की तुलना में यह वास्तविक और अवश्यमभावी है।
- नोट किए जाने वाला एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि विश्व मानकों (वास्तव में मांग में अभी हाल ही में कुछ वृद्धि हुई है) को ध्यान में रखते हुए भारतीय मांग बहुत कम है। भारतीय मांग को देखते हुए चीन जनवादी गणराज्य में प्रत्येक उत्पादनकर्ता की उत्पादन क्षमता काफी अधिक है। वास्तव में भारतीय उत्पादनकर्ताओं को इस बात का ज्ञान है कि कुछ चीन के उत्पादकों के संयंत्रों का आकार इतना बढ़ा है कि यह समूची भारतीय मांग को पूरा कर सकते हैं।

छ. आयातक, निर्यातक और अन्य हेतु रखने वाले पक्षकारों के विचार

(क) आयातकों के विचार

- I. आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरिंग एसोसिएशन (एटीएमए)/-मैसर्स निंगबो नायलॉन लि.
13. निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह अनुरोध किया गया है कि वह घरेलू उद्योग द्वारा अपनी याचिका में जिस सूचना को गोपनीय रखे जाने के लिए कहा गया है ऐसी कुछ सूचना मुहैया कराए जाने के लिए कहा जाए। यदि घरेलू उद्योग मांगी गई सूचना को देने के लिए सहमत नहीं होते तो मैसर्स स्टर्लाइट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. बनाम अभिनिर्धारित प्राधिकारी के बीच उच्चतम न्यायालय की सिविल अपील संख्या 5173-5175/2001 के मामले में सदस्य लियम के निर्णय के साथ पठित नियम 7(3) के अनुसार इसे न माना जाए।
  - i. घरेलू उद्योग नियम 5(1) और (2) की अपेक्षाओं, जो पर्याप्तता, यथायोग्यता और यथार्थता के साक्ष्य से संबंधित हैं, को पूरा करने में असमर्थ रहा है। ये हैं :—
    - क) आयात सूचना आवेदन के अगोपनीय भाग में मुहैया कराई जानी चाहिए थी। सार्वजनिक अधिकार क्षेत्र में उपलब्ध आंकड़ों पर गोपनीयता का दावा नहीं किया जा सकता। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा गौण स्रोत आर्थित आईबीआईएस से आयात सूचना के प्राप्त होते हीं जांच की जानी चाहिए थी।
    - ख) आवेदन के अगोपनीय पाठ में आंकड़े केवल अप्रैल 2000 से मार्च 2003 की अवधि के ही हैं न कि समूची जांच अवधि के।
    - ग) घरेलू उद्योग द्वारा मुहैया कराए गए प्रोफार्मा IV के आंकड़ों को उपयुक्त तरीके से इंडेस्क नहीं किया गया।
    - घ) पाटन—रोधी डब्ल्यूटी ओ करार या भारत में पाटन—रोधी नियमों के उपबन्धों के अनुसार घरेलू उद्योग के इंडेक्स्ड आंकड़ों पर किसी गोपनीयता का दावा नहीं किया जा सकता। उदाहरण के तौर पर विधिक उपबन्धों के अन्तर्गत निर्धारित मानकों के अनुसार क्षमता, उत्पादन, आयात आंकड़ों आदि जैसी सूचना को गोपनीय नहीं माना जा सकता। वास्तविक आंकड़ों को बताया ही जाना चाहिए जिससे उपयोगकर्ता उद्योग अपने उत्पाद—वार विश्लेषण दे सके।
    - ड) विचाराधीन उत्पादों के लिए ग्रेडवार लाभकारिता के लिए कोई सूचना मुहैया नहीं की गई।
    - च) ग्रेडवार कम कीमत पर बिक्री के संबंध में कोई सूचना मुहैया नहीं की गई है और प्रोफार्म IV बी के अगोपनीय पाठ में एनटीसीएफ की सभी किस्मों के लिए औसतन बिक्री की कम कीमतें ही दर्शाई गई हैं।
    - छ) पाटन—रोधी नियमों के अनुबन्ध-II के पैरा (vi) में स्पष्ट व्यवस्था है कि समान

वस्तुओं की विभिन्न किस्मों के क्षति विश्लेषण पृथक होने चाहिए जब उपलब्ध आंकड़ों से उत्पादन की पृथक पहचान ऐसी प्रक्रिया के आधार पर की जानी हो जैसाकि उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादनकर्ता की बिक्री और लाभ। इस मामले में अगोपनीय पाठ स्वयं दर्शाता है कि घरेलू उद्योग के पास एनटीसीएफ अर्थात् ग्रे, डिप्ड और सीटीसी की विभिन्न किस्मों के सभी आंकड़े हैं। इसलिए 'समान वस्तुओं' की प्रत्येक उक्त किस्मों के लिए पृथक क्षति विश्लेषण न दिए जाने का कोई कारण नहीं है।

### ii. निर्मित सामान्य मूल्य

घरेलू उद्योग ने अगोपनीय पाठ में निर्मित सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य की गणना का कोई विवरण नहीं दिया है।

### iii. क्षति का न होना

- क) उत्पादन : घरेलू उद्योग के उत्पादन में जांच अवधि के दौरान ग्रे के लिए लगभग 24 प्रतिशत, डिप्ड 200 प्रतिशत और सीटीसी में 348 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- ख) क्षमता और क्षमता उपयोग : वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता में हुई वृद्धि को स्वीकार किया गया है इसलिए क्षति होने का कोई कारण नहीं है। आधार अवधि की तुलना में पीआईआई में ग्रे के लिए क्षमता उपयोग में लगभग 10 प्रतिशत, डिप्ड के लिए 200 प्रतिशत सीटीसी के लिए लगभग 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- ग) बिक्री : पीआईआई के दौरान घरेलू उद्योग के आन्तरिक बिक्री में ग्रे के लिए 23 प्रतिशत, डिप्ड के लिए 236 प्रतिशत और सीटीसी के लिए 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- घ) माल सूचियां : घरेलू उद्योग का भंडार 2000-01 के 100 के इन्डेक्स से कम होकर 2002-03 में 44.95 ही रह गया।
- ड) उत्पादकता : उत्पादकता 2000-01 के 100 के इन्डेक्स से बढ़कर 2002-03 में 123.8 हो गई।
- च) विकास : घरेलू उद्योग ने बिक्री की मात्रा में वृद्धि दर्शाई है और यह 2000-01 में 5461 मैट्रिक टन, 2001-02 में 2747 मैट्रिक टन और 2002-03 में 6407 मैट्रिक टन रही।
- छ) नियोजन : घरेलू उद्योग ने यह बात बताई है कि उन्हें नियोजन में कमी करनी पड़ी जबकि इसकी क्षमता में वृद्धि होने के कारण सुधार होना चाहिए था। आदरपूर्वक यहां यह बता दिया जाए कि घरेलू उद्योग के निर्दिष्ट प्राधिकारी ने गलत सूचना दी है। माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान घरेलू उद्योग के एक घटक मैसर्स

निलोन लि. की वर्ष 2002–03 के तुलन पत्र के संगत उद्धरण की ओर आकर्षित किया जाता है जो यहां नीचे दोहराया गया है :—

“कम्पनी नियोजन लागत में कमी लाने के प्रयोजन से चल रहे अभियान के अन्तर्गत 1993–2003 के वर्षों में 938 कर्मचारियों को स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति/पेंशन स्कीम पेश की है जिसपर 2150 लाख रुपए का खर्च होगा।”

- ज) बिक्री मूल्य : ग्रे फैब्रिक का बिक्री मूल्य 2001–02 में 85.78 से बढ़ कर 2002–03 में 86.34 इंडेक्स हो गया। यद्यपि सीटीसी के बिक्री मूल्य में बहुत मामूली सा ही परिवर्तन हुआ था तथापि डिप्प फैब्रिक के बिक्री मूल्य में वृद्धि हुई है। मांग और पूर्ति के सिद्धान्त पर चलने वाले किसी भी बाजार में सीमान्तिक उतार–चढ़ाव होते ही हैं।
- झ) लाभ : घरेलू उद्योग ने कुल सम्भावित लाभ के आंकड़े नहीं दिए हैं। इसके स्थान पर घरेलू उद्योग ने प्रति मैट्रिकटन पर लाभ दर्शाया है। घरेलू उद्योग के अन्तर्गत आने वाले सभी यूनिटों को कुल मिलाकर लाभ के आंकड़े दिए जाना अपेक्षित है।
- अ) पूंजीगत निवेश जुटाने की योग्यता : घरेलू उद्योग ने ऐसा कोई कारण नहीं बताया जिससे यह सिद्ध होता हो कि उसके द्वारा नए निवेश जुटाने के संबंध में उसकी प्रतिभा बुरी तरह से प्रभावित हुई हो। आवेदक कम्पनियों में से एक ने अपनी क्षमताएं बढ़ाई हैं और उसने आगे यह भी कहा है कि क्षमताओं में और सुधार किए जाने की योजना बनाई जा रही है।
- ट) बाजार हिस्सा : प्रेफार्मा IVक में दी गई सूचना के स्पष्ट विश्लेषणों में यह उल्लेख है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 2000–01 में 70.01 प्रतिशत से लेकर 2002–03 में 73.18 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और इस प्रकार इसमें 3.17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी बीच यद्यपि अन्य देशों के नियांत में 7.85 प्रतिशत की कमी हुई है तथापि जांच की अवधि के दौरान चीन के आयात में 4.68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- ठ) निवेश से आय : घरेलू उद्योग द्वारा क्षति के इस महत्वपूर्ण कारण पर कोई दावा नहीं किया गया।
- ड) नकद राशि : यह दर्शाया गया है कि भारतीय उत्पादक सब आपटिमय कैश फ्लो से जूझ रहे हैं जबकि यह साकारात्मक है।
- ढ) मजदूरी : इसके फलस्वरूप क्षति का कोई दावा पेश नहीं किया गया।
- ण) घरेलू मूल्यों को प्रभावित करने वाले कारक : घरेलू उद्योग ने कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की और न ही घरेलू कीमतों को प्रस्तावित करने वाले कारकों के संबंध में कोई दावा प्रस्तुत किया।

iv. घरेलू एवं कारणात्मक संबंध

घरेलू उद्योग को तथाकथित क्षति, यदि कोई हुई हो का कारण तथाकथित क्षेपित आयात नहीं माना जा सकता।

- क) घरेलू उद्योग ने भारतीय उत्पादकों और उपयोगकर्ता उद्योग के बीच समझौता और मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया के संबंध अधूरी सूचना दी है। निर्यातक यह समझते हैं कि चीन के निर्यात के मूल्य घरेलू कीमतों के निर्धारण का आधार नहीं हो सकते।
- ख) घरेलू उद्योग द्वारा स्वयं प्रस्तुत किए गए आंकड़ों से स्पष्ट है कि चीनी वस्तुओं के आयात का सीआईएफ मान अन्य देशों से किए गए आयात के सीआईएफ मान से अधिक है और इसके घरेलू उद्योग ने किसी प्रकार की जांच का कोई मामला दायर नहीं किया है।
- ग) घरेलू उद्योग ने यह स्वीकार किया है कि पहले के मामले में चार देशों के विरुद्ध क्षेपित आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाए के पश्चात् भी उनके लाभ की दर में कमी हुई है।

14. प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी ने एटीएमए और निंगबो नायलॉन द्वारा प्रस्तुत आवेदनों को नोट किया है और इन निष्कर्षों में क्षति के भाग में इन्हें हल किया है। डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए विषयगत वस्तुओं के लेनदेनवार आयात आंकड़ों पर ही प्राधिकारी आश्वस्त रहे हैं। पीओआई के आवेदन के अगोपनीय पाठ और प्रोफार्मा IVक (इन्डेक्स फार्म) में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए आंकड़े पब्लिक फाइल में उपलब्ध हैं। क्षति विश्लेषण अवधि और जांच अवधि के लिए विचाराधीन प्रत्येक उत्पाद की किस्म के लिए ग्रेडवार लाभ और क्षति विश्लेषण किए गए हैं।

I. बिड़ला टायर

- i. बिड़ला टायर, टायर, ट्यूब्स और फ्लेप्स का विनिर्माण करता है और अपने आप ही में आयातक है।
- ii. जांच की अवधि और पिछले दो वर्षों की अवधि के लिए इन्होंने भारत में आयात की सूचना दी है।
- iii. इस अवधि में अग्रिम लाईसेंस के अन्तर्गत एनटीसीएफ का कोई आयात नहीं किया गया है।

15. प्राधिकारी द्वारा जांच

- i. अप्रैल 2000 – मार्च 2001 और अप्रैल 2001–मार्च 2002 के दौरान चीन जनवादी गणराज्य से इनके द्वारा विषयगत वस्तुओं का कोई आयात नहीं किया गया।
- ■ ■ किलोग्राम मात्रा जिसका लैंडिड मूल्य \* \* \* (रुपए \* \* \* /प्रति किलोग्राम)

था मैसर्स निंगबो जिनलुन से आयात किया गया जो चीन जनवादी गणराज्य का प्रत्यर्थी निर्यातक है।  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  ( $\text{₹} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम) के लैंडिंग मूल्य का आयात मैसर्स शंघाई केमिकल्स से किया गया।

- ii. कम्पनी ने घरेलू उत्पादकों अर्थात् मैसर्स सैंचुरी एंका से सबसे बड़ी खरीद की मात्रा मूल्य और दर विवरणों के बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत की है। 2000–01 में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा खरीदी गई जिसकी औसत दर  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  /रुपए प्रति किलोग्राम थी। 2001–02 में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की औसत दर से खरीदी गई। पीओआई में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की औसत दर से खरीदी गई। खरीदारियां 1680/2 डेनियर नायलॉन फैब्रिक की थी। 2000–01 की तुलना में पीओआई की घरेलू मूल्यों में 16.02 प्रतिशत की कमी हुई।
- iii. 1260/2 डेनियर नायलॉन फैब्रिक की  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा की खरीद  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की औसत दर पर की गई; और 2001–02 में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की औसत दर पर खरीद की गई। पीओआई में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की औसत दर पर की गई। घरेलू मूल्यों में 2000–01 की तुलना में पीओआई में 17.66 प्रतिशत की कमी हुई।

### III. एमआरएफ लिमिटेड, चेन्नई

एमआरएफ आटोमोबाइल टायरों, ट्यूबों, फ्लैपों, ट्रेड रबड़, अन्य रबड़ उत्पाद आदि का विनिर्माता है। आयातकों की प्रश्नावली के उनके प्रतिउत्तर में उन्होंने कहा है कि उनके द्वारा एनटीसीएफ की विदेशों से खरीद तिमाही आधार पर की जाती है।

#### 16. प्राधिकारी द्वारा जांच :

- i. 2000–01 में चीन जनवादी गणराज्य से  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम के सीआईएफ मूल्य पर  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा का आयात किया गया था और 2001–02 के दौरान  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$ , रुपए प्रति किलोग्राम की सीआईएफ मूल्य पर  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा का आयात किया गया था। पीओआई में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  किलोग्राम मात्रा का आयात चीन जनवादी गणराज्य से  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम के काफी कम सीआईएफ मूल्य पर आयात किया गया था। 2000–01 की तुलना में पीओआई की कीमतों में 25.75 प्रतिशत की कमी देखी गई है। पीओआई के दौरान चाइनीज तैपई से कोई आयात नहीं किया गया परन्तु पीओआई के दौरान इन्डोनेशिया और कोरिया जनवादी गणराज्य से अधिक ऊंची दर अर्थात् क्रमशः  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलो तथा  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम की दर से किए गए। इसकी तुलना में चीन जनवादी गणराज्य की कीमतें बहुत कम अर्थात्  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम थीं।
- ii. 2000–01 से पीओआई तक घरेलू उत्पादकों की विषयगत वस्तुएं की दरें सामान्यतः कम थीं। ये दरें 2000–01 में 193.96 रुपए प्रति किलोग्राम थीं और 2001–01 में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम थीं और पीओआई में  $\text{₹} \text{--} \text{--} \text{--}$  रुपए प्रति किलोग्राम थीं।

2000–01 की तुलना में पीओआई में घरेलू मूल्यों में 19.33 प्रतिशत की कमी हुई।

#### IV. जे.के. इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली

आयातकों ने बताया कि बायस टायरों का विनिर्माण इस समय एशिया में संकेंद्रित है और नायलोन टायर कोर्ड जिसकी आवश्यकता बापटा टायरों के लिए होती है यह मुख्यतः एशिया में ही निर्मित किए जाते हैं। विकसित अर्थव्यवस्थाओं मुख्यतः अमरीका और यूरोप में जहां अधिक विकिरण होती है और जहां ट्रक और बस रेडियल टायरों में यात्री रेडियल टायर और स्टील टायर कोर्ड में पोलिएस्टर प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार इन देशों में नायलोन फैब्रिक बहुत ही सीमित मात्रा में मिलता है। चीन एक नया प्रतियोगी स्रोत के रूप में उभर कर सामने आया है और जेके इंडस्ट्रीज भी सामग्री के अनुमोदन के लिए परीक्षण प्रक्रिया में है।

#### 17. प्राधिकारी द्वारा जांच :

कम्पनी ने पीओआई के दौरान ××× रूपए प्रति किलोग्राम की सीआईएफ मूल्य पर ××× किलोग्राम मात्रा का आयात शुल्क का भुगतान करके किया था। निंगबो जिनलुन एंड एक्सपोर्ट कम्पनी लि., चीन से इसका लैंडिड मूल्य ××× रूपए प्रति किलोग्राम था। पीओआई में सीआईएफ मूल्य और लैंडिड मूल्य कोरिया जनवादी गणराज्य, इंडोनेशिया और चारनीज तेपई के लैंडिड मूल्यों ने काफी कम थे और ये क्रमशः ××× रूपए, ××× रूपए, और ××× रूपए प्रति किलोग्राम थे। पीओआई में यह और देखा जा सकता है कि चीन के लैंडिड मूल्य 2001–02 में विषयगत वस्तुओं के लैंडिंग मूल्यों की तुलना में इनमें उल्लेखनीय कमी हुई है और यह ××× रूपए प्रति किलोग्राम के अर्थात् पीओआई में चीन जनवादी गणराज्य के लैंडिड मूल्य में 16.23 प्रतिशत की कमी हुई है।

#### V. हेलर मार्किटिंग एंड कनसलटेंट्स प्रा. लि., चेन्नई:

- यह कम्पनी वैफंग ग्रेट ड्रेगन केमिकल्स फाइबर लि. और स्टील केमिकल फाइबर लि. कम्पनी के एजेंट के रूप में कार्य कर रही है जो चीन जनवादी गणराज्य में विषयगत वस्तुओं की विनिर्माता है।
- यह कम्पनी पाटन रोधी कार्यवाहियों में एक पक्षकार होगी जो सुनवाई/कार्यवाही के दौरान उक्त दोनों कम्पनियों का प्रतिनिधित्व करेगी।

#### ख) नियातिकों के विचार

##### I. निंगबो नायलोन कम्पनी लि.

निंगबो नायलोन के विचार एटीएमए द्वारा दिए गए विचारों जैसे ही है और इन्हें उक्त पैरा जी 71 में देखा जा सकता है।

- II. वैफेंग ग्रेट इंगेन केमिकल फाइबर कम्पनी लि. और शानडोंग पोलीटेक्स केमिकल फाइबर कम्पनी लि.
- i. निर्यातकों का उद्देश्य यह सिद्ध करता है कि इन कम्पनियों द्वारा एनटीसीएफ के निर्यात से भारत के घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंची है और निर्यात सही अर्थों में प्रतियोगी आधार पर किया जा रहा है। वास्तव में यह बात अर्जीदारों द्वारा रिकार्डिंग तथ्य से और सिद्ध हो जाती है कि चीन से एनटीसीएफ के निर्यात में विश्व व्यापक यह महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। वास्तव में एनटीसीएफ के निर्यातकों ने जो विश्व व्यापक उल्लेखनीय वृद्धि की है वह इन कम्पनियों सहित चाइनीज उत्पादकों की क्षमता दर्शाते हैं जो विश्व स्तर पर प्रतियोगी हैं और जिन्हें पाटन के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।
  - ii. सामान्य मूल्य पाटन—रोधी नियमावली के अनुबन्ध के पैरा 1 से 6 के अन्तर्गत निर्धारित किया जाना चाहिए और यह निर्मित लागत दृष्टिकोण के अध्ययनीन नहीं होना चाहिए। पोलीटेक्स ने निर्यातकों की प्रश्नावली के अपने उत्तरों के भाग के रूप में इस प्रयोजन के लिए सभी उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराई है और बाजार परिस्थितियों में कार्य चालन पर पृथक विवरण प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त एक सहयोगी पक्षकार के रूप में इसने ऐसी अतिरिक्त सामग्री भी उपलब्ध कराई है जिसकी आवश्यकता थी।
  - iii. संलग्न पी एंड एल विवरणों के अनुसार इन कम्पनियों ने लाभ कमाए हैं और ऐसी स्थिति में इसके बिक्री मूल्य प्रत्यक्षतः विद्यमान्य बाजार परिस्थितियों, प्रतियोगिता और लाभदायकता द्वारा निर्धारित होते हैं। यह सच है कि घरेलू बाजार में एनटीसीएफ के बाजार मूल्य में कमी आई है और यह एनटीसीएफ के एफओबी निर्यात मूल्य में भी दर्शाई गई है। यह कच्ची सामग्री की कीमतों में हुई अधिक कमी के कारण हुई है।
  - iv. प्रत्यार्थियों की यह धारणा कि कुछ चीनी उत्पादकों के पास इतने बड़े आकार के संयंत्र हैं जिससे वह समूची भारतीय मांग को पूरा कर सकते हैं। पाटन की आशंका अनुमान मात्र या बहुत कम संभावना वाली नहीं है बल्कि वास्तविक और अवश्यमभावी डर तो स्पर्धा आधारित है जो खुले बाजार की परिस्थितियों के मूल्यों का सामना करने के स्थान पर स्पर्धा से सुरक्षा पाना चाहते हैं।
  - v. याची का डर स्पर्धा का सामना करने से पड़ने वाले प्रभाव से बचना है और यही बात याची की याचिका के ध्येय से स्पष्ट हो जाती है कि चीन के उत्पादकों की जो कीमतें हैं उन्हीं कीमतों को भारतीय उद्योग बैंचमार्क के रूप में मानने को मजबूर हैं। ऐसा न करने पर भारतीय उत्पादकों को हानि हो रही है।
  - vi. एनटीसीएफ के लिए जो मूल्य लिए जा रहे हैं वह चीन जनवादी गणराज्य से किए गए आयात; के कारण याची द्वारा की जाने वाली कीमतों की तुलना में काफी अधिक हैं और यह भी स्पष्ट है कि निर्यात करने वाली कम्पनियों द्वारा की जा रही कीमतें तेवान, इंडोनेशिया, कोरिया या थाईलैंड से आयात के लिए याची द्वारा दिखाई गई औसत कीमतों से मेल नहीं खाती।

**III. जिआंगसू क्यूनफा केमिकल्स कम्पनी लि.**

- i. यद्यपि जिआंगसू इस याचिका में वर्णित पक्षकार नहीं है परन्तु वह इन जांचों में प्राधिकारी को पूरी तरह से सहयोग देंगे।
- ii. पाटन—रोधी जांच के संबंध में बेफंग ग्रेट ड्रेगन केमिकल्स फाइबर कम्पनी लि. और शनडोंग पोलीटेक्स केमिकल फाइबर कम्पनी लि. ने जो तर्क दिए हैं सामान्यतः निर्यातक ने उन्हीं को ही अधिकृत किया है।

**IV. स्टील केमिकल फाइबर कम्पनी लि.**

- i. इस प्रत्यर्थी ने यह बताया है कि उन्होंने पीओआई के दौरान भारतीय बाजार में प्रत्यक्षतः विषयगत उत्पादों का निर्यात नहीं किया है और इस प्रकार भारतीय घरेलू उद्योग को इससे कोई हानि नहीं हुई है।
- ii. सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उनपर पाटन रोधी शुल्क का आकलन तथा संग्रहण एवं क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के अन्तर्गत अनुच्छेद 22 के अनुसार मौजूदा जांच के अन्तिम निष्कर्षों के पश्चात् वह एक नई शिप्पर समीक्षा कराना चाहते हैं।
- iii. वह मौजूदा जांच के साथ सहयोग करना चाहते हैं और डीजीएडी की अपेक्षाओं के अनुसार उपयुक्त आंकड़े प्रस्तुत करेंगे।

**अ) उठाए गए मामलों की जांच**

18. आवेदकों, निर्यातकों/उत्पादकों और आयातकों/उपयोगकर्ता उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों की नियमों के अन्तर्गत जहां तक वे संगत हैं और मामले पर प्रभाव डाल सकते हैं, की जांच की गई और इन पर इसके अन्तर्गत समुचित स्थान पर कार्रवाई की गई है।

**मार्किट एकोनोमी ट्रीटमेंट प्रश्नावली की जांच**

19. जानकारी वाले निर्यातकों और चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को जैसाकि सूचित किया गया है प्राधिकारी यथा संशोधित पाटन रोधी नियमों के अनुबन्ध I के पैरा (7) और (8) को ध्यान में रखते हुए गैर बाजारवादी अर्थव्यवस्था वाले चीन जनवादी गणराज्य के आवेदक के दावों की जांच करना चाहता है।
20. यथासंशोधित पाटर रोधी नियमों के अनुबन्ध—I के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर बाजारवादी अर्थव्यवस्था की धारणा को चुनौती दी जा सकती है यदि इसे सिद्ध करने के लिए चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित प्रक्रिया के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। सहयोग करने वाले चीन जनवादी गणराज्य से विषयगत वस्तुओं के निर्यातक/उत्पादक मार्किट एकोनोमी ट्रीटमेंट की प्रश्नावली के प्रतिउत्तर में पैराग्राफ 8 के

उपर पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्ति साक्ष्य प्रस्तुत करने पर निविष्ट प्राधिकारी को निम्नलिखित प्रक्रिया पर विचार करने में सहायता मिलेगी कि क्या :

क) चीन जनवादी गणराज्य की संबंधित फर्मों के मूल्य, लागत और कछ्ये समान सहित इनपुट, प्रौद्योगिकी लागत और श्रम, उत्पादन, बिक्री और निवेश के बारे में निर्णय पूर्ति और मांग के बाजार के संकेतकों के प्रतिउत्तर में लिए जाते हैं और इस संबंध में राज्य की ओर से कोई महत्वपूर्ण हस्तक्षेप नहीं किया जाता और क्या मुख्य इनपुटों की लागतें पर्याप्त रूप में बाजार मूल्यों को दर्शाती हैं।

ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति भूतपूर्व गैर बाजारवाली अर्थव्यवस्था प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण हानियों के अध्यधीन होगी विशेषकर परिसम्पत्तियों के मूल्यहास अन्य बट्टे खाते डाली गई राशियों, वस्तु के बदले वस्तु व्यापार और ऋणों के मुआवजे के माध्यम से भुगतान के संबंध में;

ग) ऐसी फर्मों दिवालियापन और सम्पत्ति कानूनों के अध्यधीन होंगी जो फर्मों के संतु संचालन और स्थिरता के लिए विधिक आवश्यम्भाविता की गारंटी देती है।

घ) परिवर्तन के लिए विनियम हर बाजार दर के हिसाब से होते हैं।

- I. मैसर्स निंगबू नायलॉन कम्पनी लि. द्वारा एमईटी की प्रश्नावली का प्रतिउत्तर
21. मैसर्स निंगबू नायलॉन कम्पनी लि. ने एमईटी की प्रश्नावली के उत्तर दे दिए हैं। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि मैसर्स निंगबू नायलॉन कम्पनी लि. ने बताया है कि वह एक पूर्ण रूप से गैर सरकारी चाइनीज लि. देयता वाली कम्पनी है। ऐसोसिएशन के अनुच्छेदों में यह बताया गया है कि पंजीगत पूँजी आरएमबी की है जिसमें से विधिगत व्यक्तियों की तथा शेयर आन्तरिक स्टाफ कार्मिकों के हैं। कुल सामान्य शेयरों के 97.67 प्रतिशत शेयर कंपनी के प्रोमोटरों को जारी किए गए तथा 2.33 प्रतिशत शेयर्स कम्पनी के स्टाफ और वर्करों को जारी किए गए। हालांकि इसमें प्रोमोटर कम्पनियों के नाम दर्शाए गए हैं जिनमें ग्रामीण विकास, स्थानीय उद्योग आपूर्ति व मार्केटिंग तथा स्थानीय प्रश्न भूमि सुधार एवं खेती से संबंधित निगम भी शामिल हैं, लेकिन प्राप्त प्रतिउत्तर से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि इन प्रोमोटर कम्पनियों में से कोई कम्पनी सरकारी कम्पनी है।
22. आवेदकों द्वारा उपलब्ध करायी गई सूचना तथा किंग्रिन ग्रुप कम्पनी की वेबसाइट अधीसत <http://www.kingrin.com> पर उपलब्ध सूचना के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि निगम नाइलोन में 97.78 प्रतिशत हिस्सेदारी किंग्रिन कार्पोरेशन नामक कम्पनी की है जोकि 1982 में स्थापित की गई थी। उक्त कार्पोरेशन की 67.87 प्रतिशत हिस्सेदारी ग्राम व टाउनशिप सहकारिताओं की है। किंग्रिन ग्रुप कम्पनी के बारे में बताया गया है कि यह एशिया में डिप्ट नायलोन टायर कोर्ड फैब्रिक्स की सबसे बड़ी निर्माता व सप्लायर कम्पनी है और शीम में सर्वाधिक बड़े उद्यमों में से एक है। निंगबू नाइलोन कम्पनी लि. को इस ग्रुप का एक प्रमुख उद्यम माना जाता है। जीजियांग प्रांत में स्थित टाउनशिप उद्यमों में यह ग्रुप लागतार छ वर्षों

से प्रथम स्थान पर है। उपर्युक्त सभी बातों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि उत्तरदाता कम्पनी में राज्य की ओर से कोई बड़ा हस्तक्षेप नहीं हुआ है।

23. कम्पनी द्वारा कम्पनी कानून, श्रम कानून, लेखा कानून तथा ऐसोसिएशन के अनुच्छेदों का अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध कराया गया है।
24. उत्तरदाता कम्पनी अपने प्रमुख कच्चे माल के लगभग 60 प्रतिशत भाग की खरीद विदेशी बाजारों से कर रही है जबकि शेष 40 प्रतिशत कच्चे माल की खरीद चीन के अन्दर की जाती है। कम्पनी द्वारा चीन के आपूर्तिकर्ताओं से की जाने वाली खरीददारी की विधि कच्चे माल आपूर्तिकर्ताओं के स्वरूप तथा खरीदे गए कच्चे माल की दरों के बारे में कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया गया है जिनके बारे में एमईटी प्रश्नावली में विशेष रूप से पूछा गया था।
25. यह उल्लेख किया गया है कि बिजली और स्टीम की खरीददारी सिक्सी जिनलन एनर्जी डेवलपमेंट कार्पोरेशन लि. जोकि एक निजी स्वामित्व वाली कम्पनी बताई गई है, से की जाती है। तथापि, मौजूदा बाजार मूल्यों के बारे में डाटा एवं प्रमाण की शक्ति में कोई संकेत नहीं दिया गया है। मौजूदा बाजार मूल्यों के संबंध में संकेत की यही कमी जल आपूर्ति के संबंध में भी लागू होती है। पीओआई के दौरान विनियम दर में यूएस डालर = 8.27–8.28 आरएमबी के बीच घट बढ़ का उल्लेख किया गया है। इनपुट्स की खरीद तथा निर्यात बिक्री की प्राप्तियों रूपान्तरण के लिए एक ही विनियम दर अर्थात् 8.2799 है।
- II. एमईटी प्रश्नावली के संबंध में मैसर्स वीफेंग ग्रेट ड्रैगन कैमिकल फाइबर कम्पनी लि., शान्डोंग कैमिकल फाइबर कम्पनी लि. तथा मैसर्स जिआंगसू कुनफा कैमिकल कम्पनी लि. द्वारा दिया गया उत्तर।
26. ऊपर वर्णित निर्यातकों द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था शर्तों के अन्तर्गत कार्य करने के संबंध में विवरण दिया गया है लेकिन उन्होंने एमईटी प्रश्नावली में विशेष रूप से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया है।
- III. निर्यातकों से संबन्धित प्रश्नावली का उत्तर
27. प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य स्थित निम्नलिखित सहयोगी निर्माताओं/उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का विश्लेषण किया है :—
  - i. मैसर्स निंगबो नाइलोन कम्पनी लि।।
  - ii. मैसर्स वीफेंग ग्रेट ड्रैगन कैमिकल फाइबर कम्पनी लि. और शॉडोंग पॉलीटैक्स कैमिकल फाइबर कम्पनी लि।।
  - iii. मैसर्स जिआंगसू कुनफा कैमिकल कम्पनी लि।।
28. प्राधिकारी ने पाया है कि उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा उत्पादन लागत और घरेलू बिक्री के संबंध में दी गई सूचना से उनकी दावों और प्रस्तुत आंकड़ों में अन्तर उजागर हुआ है। लागत

संबंधी सम्पूर्ण आंकड़ों तथा निर्यातकों द्वारा विषयगत वस्तुओं की विभिन्न किस्मों की पृथक—पृथक घरेलू बिक्री के अभाव में घरेलू बिक्री का परीक्षण व्यापार की सामान्य स्थिति में सम्भव नहीं है। इस प्रकार पाटन रोधी नियमों के अनुबंध I के उपनियम 2(i) और (ii) के साथ पठित धारा 9क (1) ग (i) और (ii) में निहित उपबंधों के अनुसार सामान्य मूल्य पर निर्धारण नहीं किया जा सकता।

29. प्राधिकारी ने यह पाया है कि उत्तरदाता निर्यातकों/उत्पादकों ने पैरा 8 के उप पैरा (3) के अनुसार गैर—बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना के निरोध के संबंध में अपर्याप्त सूचना/प्रमाण प्रस्तुत किया है। उत्तरदाता निर्यातकों ने कतिपय अभिकथन एवं दावे प्रस्तुत किए हैं जिनके संबंध में कोई प्रमाण नहीं दिया गया है। इसलिए प्राधिकारी यह निश्चित कर पाने में असमर्थ है कि क्या सहयोगी फर्में लागत संबंधी बाजार सिद्धान्तों और मूल्य ढांचों के आधार पर कार्य कर रही है।
30. व्यापक कमियों के संबंध में अलग अलग निर्यातकों को गोपनीय आधार पर सूचित किया जा रहा है। इस संबंध में प्राप्त किसी तरह के जवाब का परीक्षण आगे की जांच पड़ताल के दौरान तथा जहां कहीं आवश्यक हो, उचित प्रमाणन के पश्चात किया जाएगा।
31. उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी यह निश्चित कर पाने में असमर्थ है कि निर्यातकों द्वारा उसे प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार चीन जनवादी गणराज्य की विषयगत वस्तुओं के सामान्य मूल्य और उत्पादन लागत के संबंध में निर्धारण कैसे किया जाए।
32. समय—समय पर यथा संशोधित पाटन रोधी नियमों के अनुबंध I, पैरा 7 और 8 के प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य निम्नलिखित आधार पर तय किये जाने चाहिए :—
  - क) किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में प्रचलित मूल्य अथवा निर्मित मूल्य के आधार पर, अथवा भारत सहित ऐसे तीसरे देश के मूल्य से अन्य देशों के मूल्यों के आधार पर अथवा।
  - ख) जहां कहीं किसी अन्य तर्क संगत आधार पर तथा समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में दिए गए अथवा देय मूल्य के आधार पर निर्धारण करना संभव ना हो तो आवश्यकता पड़ने पर सामान्य मूल्य निर्धारण में न्यायोचित लाभ मार्जिन को शामिल किया जाना चाहिए।
33. चूंकि उत्पादन लागत और घरेलू बिक्री संबंधी आंकड़ों में अंतर है और विषयगत वस्तुओं कि किस्मों/ग्रेडों के मानवे में यह आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए पाटन रोधी नियम के अनुबंध—I के उपनियम 2(i) और (ii) के साथ पठित धारा 9 क (1) (ग) (i) और (ii) में निहित प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता। बाजार संकेतों के परिणामों के आधार पर तैयार लागत और मूल्य संरचनाओं से संबंधित एमईटी प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में कोई स्पष्ट बात सामने नहीं आई है। इसलिए प्राधिकारी पैरा 1 से 6 में निर्दिष्ट सिद्धान्तों को लागू करने में असमर्थ है और इन प्रारम्भिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ, समय—समय पर यथा संशोधित पाटन रोधी नियमों के अनुबंध—I, पैरा 7 और 8 के प्रावधानों

के अनुसार कार्रवाई करने हेतु बाध्य है। बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने अथवा अन्यथा मामले का पुनः परीक्षण आगे की जांच-पड़ताल के दौरान किया जाएगा और ऐसा करना कमियों से संबंधित निर्देशों का अनुपालन करने के तथा आगे उपलब्ध करायी गई सूचना के प्रमाणीकरण के अधीन होगा।

## 1. सामान्य मूल्य

34. इन परिस्थितियों में चीन जनवादी गणराज्य ग्रे, डिप्ड और सीटीसी किस्मों से संबंधित विषयगत वस्तुओं के सामान्य मूल निर्धारण के लिए अनुमानित उत्पादन लागत तथा बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य खर्च एवं तर्क संगत समायोजनों के पश्चात लाभ की न्यायोचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचना को आधार बनाया गया है। वेटेड औसत सामान्य मूल्य का निर्धारण ग्रे, डिप्ड और सीटीसी की विशिष्ट परिमात्रा लेने के बाद किया गया है। प्राधिकारी ने पाया है कि उपलब्ध सूचना के अनुसार कुल आयातों में सीटीसी का भार सीमान्तिक है।  
 1 यूएसडालर = 48.40 के पीओआई के दौरान औसत विनिमय दर पर विचार करने के पश्चात इससे संबंधित वेटेड औसत ₹ ५० प्रति कि.ग्रा. माना गया है।

## 2. निर्यात मूल्य

35. एकस फैक्ट्री निर्यात मूल्य प्राधिकारी के पास उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी के पास एनटीसीएफ के लिए वेटेड औसत सीआईएफ मूल्य के साथ साथ वेटेड औसत एफओबी मूल्य भी उपलब्ध है। केवल अन्तर्देशीय माल भाड़ के संबंध में न्यायोचित समायोजन पर विचार करने के पश्चात एनटीसीएफ के संबंध में वेटेड औसत एकस फैक्ट्री निर्यात मूल्य डालर प्रति कि.ग्रा. बैठता है। जांच अवधि के दौरान 48.40 = 1 यूएसडालर की औसत विनिमय दर को अपनाया गया है।

## पाटन मार्जिन

36. इससे एनटीसीएफ के संबंध में 41 प्रतिशत और डालर प्रति कि.ग्रा. का वेटेड औसत पाटन मार्जिन प्राप्त होता है।

## ज. क्षति

37. नियम 11 सप्रा, अनुबंध-II के अन्तर्गत जब किसी तरह की क्षति का पता चलता है तो ऐसे निष्कर्ष के लिए घरेलू उद्योग को हर्दृ क्षति का निर्धारण करना शामिल होगा, जिसके लिए सभी संगत तथ्यों, जिनमें पाटन की गई आयात वस्तुओं का परिमाण, समान तरह की वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार मूल्यों पर उनका प्रभाव तथा परिणाम स्वरूप ऐसे आयातों से इस तरह की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर पड़ने वाले प्रभाव, शामिल हैं, को भी ध्यान में रखना होगा। मूल्यों पर पाटन आयातित वस्तुओं के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या पाटन आयातित वस्तुओं के कारण भारत में समान तरह की वस्तुओं के मूल्य की जुलना में मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण कमी हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से अन्यथा मूल्यों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी आती है अथवा मूल्य वृद्धि रुकती है जो अन्यथा महत्वपूर्ण सार तक हुई होती।

38. घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के लिए प्राधिकारी ने ऐसी अन्य सूचियों पर विचार किया है जिनका उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा तथा मार्जिन, आदि के रूप में उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

(क) आयात की मात्रा (डी जी सी आई एस के अनुसार)

मात्रा:मी.टन यूनिट कीमत:रु./फि.ग्रा

|                       | 1999-2000    |            | 2000-01      |            | 2001-02      |            | जांच अवधि    |              | जांच अवधि(वार्षिकीकृत) |            |
|-----------------------|--------------|------------|--------------|------------|--------------|------------|--------------|--------------|------------------------|------------|
|                       | मात्रा       | यूनिट कीमत   | मात्रा                 | यूनिट कीमत |
| <b>देशवार आयात</b>    |              |            |              |            |              |            |              |              |                        |            |
| चीन जन.गण.            | 1017<br>08   | 124.3      | 1984.<br>56  | 120.74     | 1677<br>04   | 138.34     | 6095.<br>79  | 116.08<br>3  | 4876.6<br>8            | 116.0<br>8 |
| अन्य देश              | 1563<br>2.35 | 126.32     | 1626<br>7.99 | 149.13     | 12521<br>.88 | 135.87     | 1979<br>3.77 | 124.99<br>01 | 15835.<br>9            | 124.9<br>9 |
| कुल आयात              | 1864<br>9.43 | 126.20     | 1825<br>2.55 | 146.04     | 14198<br>.92 | 136.16     | 2588<br>9.56 | 122.89<br>65 | 20711.<br>65           | 122.8<br>9 |
| <b>वाणियार हिस्सा</b> |              |            |              |            |              |            |              |              |                        |            |
| चीन                   | 6.11%        |            | 10.87<br>%   |            | 11.81<br>%   |            | 23.55<br>%   |              | 23.55<br>%             |            |
| अन्य                  | 93.89<br>%   |            | 89.13<br>%   |            | 88.19<br>%   |            | 76.45<br>%   |              | 76.45<br>%             |            |

39. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस के आंकड़ों पर विश्वास किया है। डीजीसीआईएस ने जांच-अवधि के लिए सौदेवार आंकड़े भी उपलब्ध कराए हैं। प्राधिकारी नोट करता है कि सौदेवार आंकड़ों (असाधारण सौदों को छोड़कर) के अनुसार संबद्ध देश से आयात-मात्रा और ग्रे, डिप्ड तथा सीटीसी फैब्रिक (सूचीकृत) का मूल्य निम्नानुसार रहा -

| चीन गणराज्य  | जनवादी | मात्रा(मी.टन) | मूल्य (रु०) | दर(सीआईएफ रु०/फि.ग्रा.) |
|--------------|--------|---------------|-------------|-------------------------|
| ग्रे फैब्रिक | 57     |               | 55          | 96                      |
| डिप्ड        | 36     |               | 38          | 104                     |
| सीटीसी       | 7      |               | 7           | 112                     |
| योग          | 100    |               | 100         | 100                     |

40 प्राधिकारी नोट करता है कि कुल आयातों में चीन का हिस्सा जो 1999-00 में 6.11% रहा था, बढ़कर जांच-अवधि में 23.55% हो गया। अन्य देशों का हिस्सा जोकि आधार वर्ष में 93.89% रहा था, घटकर जांच अवधि में 76.45% रह गया।

41. हालांकि प्राधिकारी ने इन अस्थायी जांच-परिणामों के प्रयोजनार्थ डीजीसीआईएस के आंकड़ों पर विश्वास किया है लेकिन, प्राधिकारी नोट करता है कि चीन जन.गण. से संबद्ध माल के वास्तविक आयात कहीं अधिक हुए हैं। इस संबंध में प्राधिकारी ने चीन के सीमाशुल्क विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए निर्यात-मात्रा के आंकड़ों की भी जांच की है जिन्हें विश्व व्यापार नक्शे में परिलक्षित किया गया, जिनके जांच-अवधि के ब्यौरे नीचे दी गई सारणी में दर्शाए गए हैं-

### स्रोत: वर्ल्ड ट्रेड एटलस

| चीन का सीमा शुल्क विभाग | मात्रा(कि.ग्रा.) | मूल्य (₹०) | ₹०/कि.ग्रा. |
|-------------------------|------------------|------------|-------------|
| अप्रैल-02               | 131513           | 16279000   | 123.78      |
| मई-02                   | 267360           | 29174000   | 109.12      |
| जून-02                  | 293269           | 33574000   | 114.48      |
| जुलाई-02                | 203311           | 23478000   | 115.48      |
| अगस्त-02                | 389666           | 41533000   | 106.59      |
| सित.-02                 | 385597           | 42151000   | 109.31      |
| अक्टू.-02               | 561010           | 62927000   | 112.17      |
| नव.-02                  | 635692           | 69378000   | 109.14      |
| दिस.-02                 | 672172           | 74463000   | 110.78      |
| जन.-03                  | 753053           | 85175000   | 113.11      |
| फर.-03                  | 717198           | 80963000   | 112.89      |
| मा.-03                  | 574485           | 64355000   | 112.02      |
| अप्रै.-03               | 761759           | 85905000   | 112.77      |
| मई-03                   | 650924           | 73766000   | 111.17      |
| जून-03                  | 973510           | 109162000  | 112.13      |
|                         | 7970519          | 890883000  | 111.77      |

42. एन टी सी एफ के बताई गई मात्रा डीसीआईएस द्वारा प्रस्तुत मात्रा की तुलना में काफी अधिक है और प्रति यूनिट भारित औसत कीमतें अपेक्षित या कम हैं।
43. प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि सहभागिताकारी निर्यातकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उनके द्वारा जांच-अवधि के दौरान निर्यातित /एनटीसीएफ की मात्रा 8427.308 एमटी रही। ऐसी और भी कंपनियां हा सकती हैं जिन्होंने इस माल का निर्यात किया होगा और जिन्होंने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं भेजा होगा।

## (ख) मांग:

मात्रा: मी.टन

| विक्रिया                                      | 1999-2000 | 2000-01  | 2001-02  | जांच अवधि | जांच अवधि(वार्षिक ग्रीकृत) |
|---|-----------|----------|----------|-----------|----------------------------|
| ग्रे  | 42036.29  | 38487.47 | 42641.1  | 59654.03  | 47723.23                   |
| डिल्ड   | 4207.78   | 2069.65  | 4029.46  | 8852.42   | 7082.14                    |
| सीटीसी  | 744       | 728      | 648.45   | 876.84    | 701.47                     |
| कुल विक्रिया(घरेलू उद्योग)                    | 46988.05  | 41255.12 | 47319.01 | 69383.29  | 55506.84                   |
|   |           |          |          |           |                            |
| कुल आयात(डीजीसीआईएस के अनुसार)                | 16649.43  | 18252.55 | 14198.92 | 25889.56  | 20711.65                   |
| आयात(चीन जन.गण.)                              | 1017.08   | 1984.55  | 1677.05  | 6095.79   | 4876.63                    |
| आयात(अन्य द्वाता)                             | 15632.35  | 16267.99 | 12521.87 | 19793.78  | 15835.02                   |
|   |           |          |          |           |                            |
| मांग  | 63637.49  | 59537.66 | 61517.93 | 95272.86  | 76218.5                    |
| मांग% में घरेलू उद्योग का हिस्सा(याचिकाकर्ता) | 73.84%    | 69.34%   | 76.92%   | 72.83%    | 72.83%                     |
| आयात हिस्सा % में                             | 26.16%    | 30.66%   | 23.08%   | 27.17%    | 27.17%                     |
| चीन जन.गण. से पाटित आयातों का हिस्सा % में    | 1.60%     | 3.33%    | 2.73%    | 6.40%     | 6.40%                      |
| अन्य का हिस्सा % में                          | 24.56%    | 27.32%   | 20.35%   | 20.78%    | 20.78%                     |
| घरेलू उत्पादन                                 | 45988     | 42062    | 47479    | 72025     | 57620                      |
| चीन से आयातित उत्पादन संबंधी हिस्सा           | 2.16      | 4.72%    | 3.53%    | 8.46%     | 8.46%                      |
| चीन से आयातित खपत संबंधी हिस्सा               | 1.60%     | 3.33%    | 2.73%    | 6.40%     | 6.40%                      |

44. प्राधिकारी नोट करता है कि क्षति की विश्लेषण-अवधि में मांग में 19.77% की वृद्धि हुई, उत्पादन में 25.29% की वृद्धि हुई जबकि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में केवल 18.13% की वृद्धि हो सकी। मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट रही और आयात के हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में तदनुसरी वृद्धि से मेल नहीं खाती है। इसके विपरीत, मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है जबकि चीन के हिस्से में काफी वृद्धि दर्ज की गई है।
45. यदि चीन से होने वाले आयातों को विश्व व्यापार मानचित्रावली में परिलक्षित चीन के सीमाशुल्क आंकड़ों के अनुसार समझा जाता है तो जांच-अवधि में चीन का हिस्सा 9.57% होगा। मांग में घरेलू उद्योग तथा अन्यों का हिस्सा और अधिक घटकर जांच अवधि में क्रमशः 66.66% तथा 23.77% रह जाएगा।

| विवरण                                      | जांच अवधि |
|--|-----------|
| चीन से आयात(वर्ल्ड ट्रेड एटलस के अनुसार)   | 7970.52   |
| अन्य स्रोतों से आयात(डीजीसीआईएस के अनुसार) | 19793.78  |
| कुल आयात                                   | 27764.30  |
| कुल बिक्री (घरेलू उद्योग)                  | 55506.84  |
| मांग                                       | 83271.14  |
| घरेलू उद्योग का हिस्सा                     | 66.66%    |
| चीन का हिस्सा                              | 9.57%     |
| अन्य का हिस्सा                             | 23.77%    |

46. प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि विश्व व्यापार मानचित्रावली के अनुसार चीन से एनटीसीएफ के निर्यात 2087 एमटी (अप्रैल, 01 से जून, 02 तक) से बढ़कर जांच अवधि में 7971 एमटी और अप्रैल, 03-अप्रैल, 04 तक की अवधि में 12574 एमटी हो गए। यह नोट किया जाता है कि आयात-आंकड़ों में फेरबदल हुआ है। प्राधिकारी का प्रस्ताव है कि इन फेरबदलों की जांच के

दौरान जांच की जाए। किन्तु प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने सौदेवार डीजीसीआईएस के आंकड़ों पर भरोसा किया है।

#### (ग) बाजार हिस्से में वास्तविक तथा संभाव्य गिरावट

47 प्राधिकारी नोट करता है कि डीजीसीआईएस के आंकड़ों के आधार पर घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में मामूली गिरावट आई। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि सप्लाई अन्तर लगभग 18-20000 एमटी का रहा है जिसकी पूर्ति आयातों द्वारा की जानी है। किन्तु आयातों के विश्लेषण से यह दिखाई देता है कि पाटित आयातों के हिस्से में काफी वृद्धि हुई है जबकि अन्य स्रोतों से होने वाले आयतों में गिरावट रही है।

#### (घ) बिक्रियों में वास्तविक तथा संभाव्य गिरावट

|                                  | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि(वार्षिकीकृत) |
|----------------------------------|-----------|---------|---------|------------------------|
| बिक्री (मी.टन)                   | 46988     | 41285   | 47319   | 55507                  |
| बदलाव %                          |           | -12.14% | 14.61%  | 17.30%                 |
| बिक्री वसूली                     |           |         |         |                        |
| भारित औसत (रु०/कि.ग्रा.)         | ***       | ***     | ***     | ***                    |
| भारित औसत (रु०/कि.ग्रा.) सूचीकृत | 100       | 100     | 85.79   | 87.86                  |
| बदलाव %                          |           | 0.64%   | -14.75% | 2.42%                  |

48. मांग में वृद्धि (19.77%) के तदनुरूप जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में बिक्रियों में 18.13% की वृद्धि हुई है। वर्ष 2001-02 में वसूली में काफी गिरावट रही जिसमें जांच अवधि में पिछले वर्ष की तुलना में मामूली 2.42% का सुधार हो गया। यदि घरेलू उद्योग ने जांच-अवधि के दौरान वास्तविक रूप में बेची गई मात्राओं की बिक्री नहीं की होती तो इससे माल सूची में वृद्धि अथवा प्राप्त उत्पादन स्तर लक्ष्यों में कमी हो गई होती। अधिक मात्रा में बिक्री से पाटित आयातों के प्रतिकूल प्रभाव को कमी करने में सहायता मिली। इस प्रकार, हालांकि बिक्री-मात्रा में वृद्धि तो दर्शाई गई, लेकिन भारित औसत बिक्री वसूली में आधार वर्ष की तुलना में जांच-अवधि के दौरान 12.13% की गिरावट दर्शाई गई।

#### (ड.) उत्पादन और क्षमता उपयोग:

| बिक्री                 | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि | जांच अवधि(वार्षिक ग्रीकृत) |
|------------------------|-----------|---------|---------|-----------|----------------------------|
| स्थापित क्षमता(मी.टन.) |           |         |         |           |                            |
| ग्रे                   | 49600     | 50500   | 55126   | 73000     | 58400                      |
| डिप्ड                  | 7680      | 7680    | 7680    | 9600      | 7680                       |
| सीटीसी                 | 1100      | 1100    | 1100    | 1375      | 1100                       |
| योग                    | 58380     | 59280   | 63906   | 83975     | 67180                      |
| उत्पादन(मी.टन.)        |           |         |         |           |                            |
| ग्रे                   | 41015     | 38690   | 42352   | 61620     | 49296                      |
| डिप्ड                  | 4229      | 2644    | 4478    | 9528      | 7622                       |
| सीटीसी                 | 744       | 728     | 648     | 877       | 701                        |
| कुल उत्पादन            | 45988     | 42062   | 47478   | 72025     | 57619                      |
| क्षमता उपयोग %         | 78.77%    | 70.95%  | 74.29%  | 85.77%    | 85.77%                     |
| ग्रे                   | 82.69%    | 76.61%  | 76.83%  | 84.41%    | 84.41%                     |
| डिप्ड                  | 55.07%    | 34.43%  | 58.31%  | 99.25%    | 99.24%                     |
| सीटीसी                 | 67.64%    | 66.18%  | 58.95%  | 63.77%    | 63.77%                     |

49. आवेदकों की क्षमता में पिछले वर्षों में वृद्धि हुई है क्योंकि एक आवेदक कंपनी ने बढ़ोतरी की और घरेलू उद्योग ने बाधाओं को समाप्त करने के प्रयास किए हैं। ऐसी संभावना थी कि भारत में संबद्ध माल की मांग में वृद्धि होगी बशर्ते कि ऑटोमोबाइल कंपनियों द्वारा संभाव्य उत्पादन-रूपर सूचित किए हैं। घरेलू उद्योग को इस संभाव्य तीव्र वृद्धि की जानकारी थी और वह इस मांग को पूरा करने का प्रयास करता रहा किंतु मांग में 19.77% की वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग के हिस्से में तदनुरूपी वृद्धि नहीं हुई है।

50. घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध माल के लिए औसत क्षमता उपयोग में वर्ष 1999-2000 से लेकर जांच अवधि तक 8.9% का सुधार हुआ है।

51. घरेलू उद्योग के अपेक्षाकृत अधिक उत्पादन के साथ-साथ बाजार मांग में वृद्धि के अनुरूप बिक्री मात्रा में भी वृद्धि हुई है किंतु संबद्ध माल के सभी ग्रेडों के संबंध में भारित औसत बिक्री वसूली में जांच-अवधि के दौरान 12.14% की काफी गिरावट रही।

## (च) निवल बिक्री वसूली तथा लैंडेड मूल्य

रु०/किग्रा.

|   | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि(वार्षिकीकृत) |
|---|-----------|---------|---------|------------------------|
| भारित औसत निवल बिक्री वसूली               |           |         |         |                        |
| ग्रे                                      | ***       | ***     | ***     | ***                    |
| डिप्ड                                     | ***       | ***     | ***     | ***                    |
| सीटीसी                                    | ***       | ***     | ***     | ***                    |
| भारित औसत                                 | ***       | ***     | ***     | ***                    |
| भारित औसत(सूचीकृत)                        | 100       | 100.64  | 85.79   | 87.86                  |
| लैंडेड मूल्य सूचीकृत डीजीसीआईएस के अनुसार |           |         |         | चीन                    |
| ग्रे                                      |           |         |         | 95.85                  |
| डिप्ड                                     |           |         |         | 104.42                 |
| सीटीसी                                    |           |         |         | 111.65                 |
| भारित औसत                                 |           |         |         | 100                    |

52. प्राधिकारी को लगता है कि चीन से होने वाले आयातों की लैंडेड कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों की तुलना में काफी कम रही। इस प्रकार चीन से होने वाले आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती रही। यह भी लगता है कि कीमत कटौती इस उत्पाद के तीनों रूपों में हो रही है। इस प्रकार कीमत कटौती औसत आधार पर हो रही है और यह एनटीसीएफ की विभिन्न किस्मों -ग्रे, डिप्ड तथा सीटीसी के संबंध में भी हो रही है।

## छ. आयातों की बिक्री वसूली तथा लैंडेड कीमत

रु० किग्रा.

| वर्ष    | घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली(सूचीकृत)(रु०/किग्रा.) | आयातों की लैंडेड कीमत(सूचीकृत) |      |
|---------|---|--------------------------------|------|
|         |   | चीन जन.गण.                     | अन्य |
| 1999-00 | 100   | 100                            | 100  |

|                           |        |       |        |
|---------------------------|--------|-------|--------|
| 2000-01                   | 100.64 | 93.67 | 113.84 |
| 2001-02                   | 85.79  | 99.37 | 96.04  |
| जांच<br>अवधि(वार्षिकीकृत) | 87.86  | 83.38 | 88.35  |

53. चीन जन गण से संबद्ध माल की भारित औसत लैंडेड कीमतों में गिरावट आधार वर्ष 1999-2000 की तुलना में लगभग 16.61% की रही है। प्राधिकारी को यह भी दिखाई देता है कि चीन से होने वाले आयातों के फलस्वरूप घरेलू उद्योग की कीमतों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान कीमत कटौती होती रही है। यह भी देखा गया है कि अन्य देशों से होने वाले आयातों की लैंडेड कीमतें चीन से होने वाले आयात की कीमतों की तुलना में अधिक रही।

ज. अन्य देशों की तुलना में चीन से कीमत कटौती:

54. विश्लेषण इस प्रकार है:

| वर्ष                  | कीमत कटौती (%) |         |
|-----------------------|----------------|---------|
|                       | चीन जन.गण.     | अन्य    |
| 1999-00               | 1.31%          | -0.30%  |
| 2000-01               | 8.14%          | -13.45% |
| 2001-02               | -14.31%        | -12.28% |
| (जांच<br>वार्षिकीकृत) | 6.34%          | -0.85%  |

झ. कीमत कटौती/बिक्री कटौती:

55. प्राधिकारी नोट करता है कि जांच-अवधि के दौरान भारित औसत बिक्री कटौती 18.51% और भारित औसत कीमत कटौती 6.34% रही। विभिन्न किस्मों के संबंध में कीमत कटौती 10 -16 % (सूचीकृत) के दायरे में और बिक्री कटौती 10 - 132.6% (सूचीकृत) के दायरे में रही।

ट. लाभप्रदता:

56. नीचे दी गई सारणी यह दर्शाती है कि उत्पादन की सूचीकृत लागत(सभी ग्रेडों के लिए भारित औसत) में जांच-अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 9.78% की गिरावट रही। प्राधिकारी ने इस बात का विश्लेषण किया है कि ऐसा इसके लिए क्षति विश्लेषण अवधि के संबंध में कैपरोलैक्टम की भारित औसत घरेलू बिक्री कीमतों में गिरावट के कारण हुआ है। बिक्री कीमतों में जांच अवधि के दौरान 1999-2000 की तुलना में लगभग 12.14% की गिरावट रही। सीओपी में गिरावट के बावजूद जोकि अपेक्षतया कम बिक्री वसूली के कारण रही थी, भारित औसत हानि प्रति किग्रा. जांच अवधि में 29.75% की वृद्धि रही।

|                     | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि(वार्षिकीकृत) |
|---------------------|---------|---------|---------|------------------------|
| उत्पादन लागत        | 100     | 100.30  | 87.42   | 90.22                  |
| बिक्री कीमत         | 100     | 100.64  | 85.79   | 87.86                  |
| लाभ और हानि( भा.औ.) | 100     | 94.62   | 114.83  | 129.75                 |

#### ठ. घरेलू उद्योग का अन्तिम स्टॉक

मात्रा.मी.टन

|                              | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि |
|------------------------------|---------|---------|---------|-----------|
| ग्रे                         | 320.61  | 1365.77 | 1159.17 | 1116.44   |
| डिप्ड                        | 184.6   | 216.75  | 175.41  | 123.25    |
| सीटीसी                       | 0       | 182.77  | 143.54  | 191.241   |
| घरेलू उद्योग का अन्तिम स्टॉक | 505.21  | 1765.29 | 1478.12 | 1430.931  |

57. अन्तिम स्टॉक की तुलना घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा से की गई है और उसे नीचे दी गई सारणी में प्रतिशत के रूप में दर्शाया गया है:

|              | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02  | जांच अवधि(वा.) |
|--------------|---------|---------|----------|----------------|
| बिक्रियां    | 46988   | 41285   | 47318.55 | 55507          |
| अन्तिम स्टॉक | 506     | 1766    | 1478     | 1431           |

|                                    |      |      |      |      |
|------------------------------------|------|------|------|------|
| बिक्रियों के % के रूप में माल सूची | 1.08 | 4.28 | 3.12 | 2.58 |
|------------------------------------|------|------|------|------|

58. यह देखा जा सकता है कि यद्यपि अन्तिम स्टॉक में समग्र रूप में वृद्धि तो हुई है किंतु बिक्रियों में यह % वृद्धि मामूली है।

#### ड. पूंजी निवेश पर आय:

रु० लाख

| सूचीकृत             | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि |
|---------------------|---------|---------|---------|-----------|
| लगाई गई पूंजी       | 100.00  | 107.60  | 103.13  | 90.16     |
| लाभ/हानि            | -100.00 | -104.10 | -111.86 | -221.32   |
| लगाई गई पूंजी पर आय | -8.98%  | -8.69%  | -9.74%  | -22.05%   |

59. पूंजी निवेश पर आय ने वही रुख अपनाया है जो लाभ तथा नकद प्रवाह ने अपनाया था। यह देखा गया कि मांग-सप्लाई अन्तर को देखते हुए घरेलू उद्योग ने और क्षमता जोड़ दी। घरेलू उद्योग को यह संभावना थी कि अपेक्षित अधिक पूंजी निवेश से अधिक लाभ होंगे। किंतु लाभ में चीन से किए गए पाटन के फलस्वरूप वृद्धि की बजाए गिरावट रही। इसके परिणामस्वरूप लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट रही।

#### ढ. नकद प्रवाह/लाभ

लाख रु.

| सूचीकृत         | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि | जांच अवधि(वार्षिक ग्रीकृत) |
|-----------------|-----------|---------|---------|-----------|----------------------------|
| लाभ/हानि        | -100.00   | -104.10 | -111.86 | -221.32   | -177.07                    |
| मूल्य हास       | 100       | 96.44   | 95.24   | 129.04    | 103.25                     |
| नकद प्रवाह/हानि | -100.00   | -116.62 | -171.98 | -372.86   | -298.29                    |

60. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई । पिछले संपन्न मध्यावधि समीक्ष में यह पाया गया कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में ह्रास आया । उसके पश्चात् लाभप्रदता में और अधिक ह्रास हुआ है ।

61. चूंकि सभी कंपनियां बहु-उत्पाद कंपनियां हैं अतः यह व्यवहारिक नहीं होगा कि केवल विचाराधीन उत्पाद के लिए ही नकद प्रवाह का निर्धारण किया जाए । किंतु नकद प्रवाह का निर्धारण कर दिया गया है जोकि केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में है । नकद प्रवाह में रुख लाभ जैसा ही रुख रहा है । यह भी नोट कर लिया जाए कि प्राधिकारी ने पिछली बार संपन्न मध्यावधि समीक्षा में यह पाया कि लाभप्रदता और इस प्रकार घरेलू उद्योग के नकद लाभ में ह्रास हुआ है । अतः इसके पश्चात् घरेलू उद्योग के लाभ और नकद प्रवाह में ह्रास हुआ है ।

#### ण. रोजगार तथा मजदूरियां

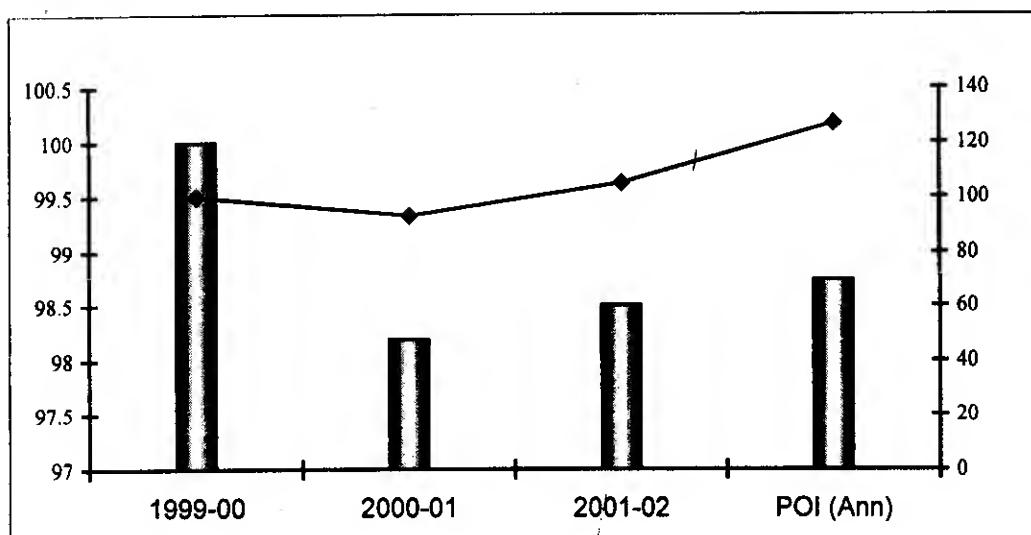
| सूचीकृत                | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच अवधि | जांच अवधि(वार्षिकीकृत) |
|------------------------|-----------|---------|---------|-----------|------------------------|
| रोजगार(संख्या में)     | 100       | 98.19   | 98.50   | 98.74     | 98.74                  |
| मजदूरियां(लाख रु. में) | 100       | 102.09  | 119.46  | 116.89    | 129.50                 |

62. क्षमता में 15.07% की वृद्धि से अधिक रोजगार का होना बनता है । किंतु घरेलू उद्योग ने क्षमता में वृद्धि के पश्चात् रोजगार में कमी कर दी । मजदूरियों में 3 वर्षों में (1999-2000 से जांच अवधि तक) लगभग 29.47% की वृद्धि दर्शाई गई है जिसका अर्थ 10% से भी कम औसत वृद्धि बनता है । प्राधिकारी ऐसी मजदूरी वृद्धि को सामान्य मजदूरी वृद्धि समझता है जिसका कारण घरेलू उद्योग को हानि का होना नहीं है । मजदूरियों में वृद्धि हुई है तो उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है । उत्पादन की मजदूरी प्रति किलोग्राम 80 बढ़ी है और यह ग्रे फैब्रिक की कुल उत्पादन लंगत का लगभग 0.3% बैठता है । किंतु बिक्री कीमतों में 1999-2000 की तुलना में जांच अवधि में लगभग 14.39% की गिरावट आई है ।

**त. उत्पादकता**

|   | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | जांच<br>अवधि(वार्षिकीकृत) |
|---|-----------|---------|---------|---------------------------|
| कुल उत्पादन                             | 45988     | 42062   | 47478   | 57620                     |
| उत्पादन प्रति कर्मचारी(मी.टन) (सूचीकृत) | 100       | 93.16   | 104.85  | 126.91                    |

63. इसका अनुमान नीचे दिए गए ग्राफ में लगाया गया है:



64. ऊपर दिया गया ग्राफ यह दर्शाता है कि इन वर्षों में प्रति कर्मचारी उत्पादकता बढ़ी है जिसे अधिक उत्पादन तथा बिक्री मात्राओं में इंगित किया गया है। इसका कारण यह है कि घरेलू उद्योग ने उत्पादन को अनुकूल बनाने तथा रोजगार कम करने के लिए प्रयास किए हैं। किंतु अधिक उत्पादकता के बावजूद घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन में लाभ के रूप में हास हुआ है और आवेदकों को हानि हुई है।

**थ. क्षति के संबंध में निष्कर्ष**

65. प्राधिकारी नोट करता है कि चीन से संबद्ध माल के आयात में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन तथा खपत की दृष्टि से वृद्धि हुई है। जहां निर्यात 1999-

2000 में 100 मी.टन से भी कम रहे वहीं यह अप्रैल, 03-जून, 03 की अवधि में लगभग 500 मी.टन. बढ़ गए।

66. हालांकि भारत में मांग में चीन जन.गण. से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है लेकिन घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट रही। यद्यपि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में मामूली गिरावट रही लेकिन यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि घरेलू उद्योग पाटन के पिछले प्रभावों से उभरने की प्रक्रिया में रहा। घरेलू उद्योग ने मांग में होने वाली वृद्धि को देखते हुए अपनी क्षमता में वृद्धि कर दी थी लेकिन वह इसका पूर्ण रूप से उपयोग नहीं कर सका। इस प्रकार हालांकि घरेलू उद्योग ने अन्य देशों की वजह से बाजार हिस्से में सुधार लाने का प्रयास किया लेकिन यह हिस्सा चीन से हुए पाटित आयातों को चला गया। इसके अलावा, मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट को मांग में समग्र वृद्धि के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

67. चीन से होने वाले आयातों के हिस्से में भारत के कुल आयातों में तीव्र वृद्धि रही जबकि अन्य देशों के आयात में गिरावट रही। साथ ही, चीन की कीमतें अन्य देशों की कीमतों की तुलना में काफी कम रहीं। इस उत्पाद के लिए पूर्व जांच की अवधि 2000-2001 रही। 2000-01 और वर्तमान जांच अवधि के बीच चीन के हिस्से में और अधिक वृद्धि हुई जबकि अन्य देशों के हिस्से में इसमें अनुपातिक दृष्टि से गिरावट रही।

68. घरेलू उद्योग की बिक्रियों में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि रही। किंतु जहां मांग में वृद्धि 19.77% रही वहीं घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि 18.13% की रही। इस प्रकार, घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि मांग में वृद्धि से कम रही। यह भी पाया जाता है कि जहां घरेलू उद्योग की ग्रे एनटीसीएफ बिक्रियों में वृद्धि केवल 15% ही रही वहीं डिप्ड बिक्रियों में 78% की वृद्धि रही। इस प्रकार, घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि डिप्ड श्रेणी की तुलना में अधिक रही जिसका कारण यह प्रतीत होता है कि दूसरे देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए गए। साईकिल टायर कोर्ड (सीटीसी) की बिक्रियों में गिरावट रही। हालांकि घरेलू उद्योग के पास काफी अनुपयुक्त क्षमता रही। इसका प्रत्यक्ष कारण चीन से पाटित आयातों का होना है।

69. हालांकि घरेलू उद्योग की बिक्रियों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है लेकिन यह पाया जाता है कि जांच अवधि की अन्तिम तिमाही में बिक्रियां 2002-03 की बिक्रियों से कम रही। साथ ही, चीन के सीमा शुल्क विभाग के अनुसार चीन से हुए आयात

इस अवधि में जो 2002-03 में 5585मी.टन हुए थे बढ़कर अप्रैल, 03-जून, 03 में 2387 मी.टन के हो गए। यह स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि यदि चीन से होने वाले आयात से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतें कम होना जारी रहता है तो घरेलू उद्योग की बिक्रियों में गिरावट आने की संभावना है। प्राधिकारी ने यह भी देखा लिया है कि जांच अवधि की अन्तिम तिमाही में और जांच अवधि के पश्चात् चीन से होने वाले औसत आयात लगभग 1000 मी.टन प्रतिमाह हो रहे हैं।

70. इस उत्पाद के आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती हुई है। घरेलू उद्योग का तर्क है कि उपभोक्ता द्वारा दी गई कीमत आयातों के आधार पर सदैव बैंच मार्क होती हैं। जहां अन्य देशों से होने वाले आयात से घरेलू उद्योग की कीमतें बैंच मार्क हो रही थीं वहीं चीन से होने वाला आयात से कम कीमतों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होनी शुरू हो गई।

71. कीमत कटौती का निर्धारण संपूर्ण अवधि के लिए संचयी आधार पर किया गया किंतु कीमत कटौती के निर्धारण में उत्पाद की तीनों किस्मों के लिए अलग-अलग(ग्रे, डिप्ड तथा सीटीसी) शामिल हैं और यह पाया गया कि 10 -16 % (सूचीकृत) के दायरे में कीमत कटौती विद्यमान रही। वास्तव में, यह पाया गया कि कीमत कटौती सीटीसी के मामले में जिसका सीटीसी बिक्री मात्रा तथा परिणामस्वरूप सीटीसी उत्पादन तथा क्षमता उपयोग से सीधे ही संबंध है, अपेक्षतया अधिक रही।

72. कम कीमत पर बिक्री का निर्धारण आयात की लैंडेड कीमत से स्थापित अक्षतिकारी कीमत से तुलना करके किया जाता है। यह तुलना सबसे पहले इस उत्पाद की तीनों किस्मों के लिए किया गया था और तत्पश्चात् भारित औसत आधार पर किया गया। यह पाया जाता है कि आयातों की लैंडेड कीमत निर्धारित अक्षतिकारी कीमत से काफी कम है। इस प्रकार, इन आयातों के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में कम कीमत पर बेचने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है।

73. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में हास आया है। यह भी नोट किया जाए कि इस उत्पाद के संबंध में पिछली जांच (जिसमें जांच अवधि 2000-01 थी), प्राधिकारी द्वारा यह पाया गया कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई (हालांकि पाटनरोधी शुल्क की कोई सिफारिश नहीं की गई क्योंकि कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं हो सका था क्योंकि चीन से आयात अपेक्षतया कम कीमत पर हुए थे)। घरेलू

उद्योग की लाभप्रदता में उस जांच अवधि के बाद और अधिक गिरावट आई । यह भी नोट किया जाता है कि इस बीच घरेलू उद्योग ने अपने उत्पादन तथा बिक्रियां बढ़ा दी । इससे घरेलू उद्योग को प्रति यूनिट ऊपरी खर्च की लागतों में कमी करने और अपनी लाभप्रदता में सुधार करने में सहायता मिली है ।

74. घरेलू उद्योग के उत्पादन में क्षति-विश्लेषण अवधि में वृद्धि हुई । यहा पाया जाता है कि उत्पादन में यह वृद्धि बिक्री मात्रा में वृद्धि की तुलना में अधिक रही । फलस्वरूप, घरेलू उद्योग संपूर्ण बढ़े हुए उत्पादन को बेच नहीं सका जिससे माल सूची में मामूली वृद्धि हुई । घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई क्योंकि देश में सबद्ध माल की मांग में वृद्धि रही, ऐसा क्षमता बढ़ाकर संभव हुआ जिससे घरेलू उद्योग को ऊपरी खर्च लागतों को काफी कम करने में सहायता मिली है । किंतु ऊपरी खर्च लागतों को कम करने के घरेलू उद्योग के इन प्रयासों से उद्योग को अपनी लाभप्रदता में सुधार करने में सहायता नहीं मिली है । लाभप्रदता के विपरीत गिरावट रही ।

75. घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग में क्षति विश्लेषण अवधि में सुधार रहा । इसे विभिन्न देशों से हुए पिछले पाटन और पाटनरोधी शुल्क के परिणामी कार्यान्वयन के संदर्भ में देखा जाना चाहिए । किंतु जहां क्षमता उपयोग में 15.07% की वृद्धि रही वहीं क्षमता उपयोग में केवल 8.9% की वृद्धि हुई । इसके अतिरिक्त, मांग में 19.77% की वृद्धि रही । इस प्रकार, क्षमता उपयोग में वृद्धि कम अनुकूल रही और घरेलू उद्योग के पास अननप्रयुक्त क्षमता रही ।

76. उत्पादन की प्रति यूनिट मजदूरी में 4.2% की वृद्धि हुई जबकि भुगतान की गई कुल मजदूरियों में 29.49% की वृद्धि हुई है । प्राधिकारी नोट करता है कि लगभग 3 वर्षों की अवधि में 29.49% की मजदूरी वृद्धि सामान्य मजदूरी वृद्धि प्रतीत होती है । सामान्य परिस्थितियों में मजदूरियों के कारण घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में यथानुपात वृद्धि होनी चाहिए थी । इस प्रकार, यदि घरेलू उद्योग के उत्पादन में बढ़ोतरी नहीं होती तो उसकी प्रति यूनिट उत्पादन लागत में लगभग \*\*\* रु० प्रति कि.ग्रा. की वृद्धि होती क्योंकि वृद्धि केवल मजदूरी में हुई । किंतु मजदूरी में वृद्धि केवल लगभग \*\*\* रु० प्रति कि.ग्रा. हुई क्योंकि घरेलू उद्योग इस मजदूरी वृद्धि को अपने अधिक उत्पादन में समाहित कर सका । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में लगभग \*\*\* रु० प्रति कि.ग्रा. की वृद्धि हो जाती । इस प्रकार, 4.57 करोड़ रु० के अधिक लाभ हो जाते । किंतु घरेलू उद्योग के इन

प्रयासों के बावजूद लाभप्रदता में गिरावट आई है। यह स्पष्ट रूप से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर आयातों के प्रभाव के कारण हुआ है।

77. प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में गिरावट आई है। ऐसा क्षमता बढ़ने तथा अपेक्षितया अधिक उत्पादन होने के बावजूद हुआ है। यह पाया जाता है कि यदि घरेलू उद्योग अपने रोजगार स्तर को कम नहीं करता तो ऐसी स्थिति में उसे लगभग 24.59 लाख रु० अधिक की मजदूरी देनी पड़ती (वास्तव में भुगतान किए गए लाख रु० की तुलना में लाख रु०)। इस प्रकार घरेलू उद्योग को इस राशि से अपनी लाभप्रदता में सुधार करना चाहिए था जबकि उसकी लाभप्रदता में घरेलू उद्योग को आयातों के कीमत प्रभाव के कारण ह्रास आया है।

78. एक ओर, रोजगार में कमी और दूसरी और उत्पादन में वृद्धि होने से घरेलू उद्योग को अपनी उत्पादकता बढ़ाने में सहायता मिली है। किंतु उत्पादकता में ऐसी वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में ह्रास आया। यदि घरेलू उद्योग ने प्रति कर्मचारी उत्पादकता का वही स्तर कायम रखा होता जो 1999-2000 में रहा था। यह पाया जाता है कि घरेलू उद्योग लगभग 2065 लोगों को रोजागार दे देता। इसके परिणामस्वरूप 4.96 करोड़ रु० की अधिक मजदूरी देनी पड़ी। इस प्रकार, उत्पादकता में सुधार से घरेलू उद्योग को 4.96 करोड़ रु० का लाभ होता। किंतु लाभप्रदता में घरेलू उद्योग पर आयातों के कीमत प्रभाव के कारण गिरावट रही।

79. नकद लाभ में भी लाभप्रदता का ही रुख रहा। यह नोट किया जाता है कि एनटीसीएफ उद्योग देश में काफी पुराना है। घरेलू उद्योग की मूल्य ह्रास लागत बहुत ही कम है। अतः लाभप्रदता में ह्रास के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को नकद हानि होने की संभावना है। वास्तव में, यह पाया जाता है कि घरेलू उद्योग को नकद हानियों की स्थिति देखने को बाध्य होना पड़ा है।

80. उत्पादन से पूंजी निवेश पर आय और घरेलू उद्योग के लिए एनटीसीएफ की बिक्रियां नकारात्मक रही। यह पाया जाता है कि हालांकि उत्पादन में वृद्धि हुई किंतु रोजगार में गिरावट आई। इससे उद्योग को लगाई गई पूंजी पर बेहतर आय हो गई होती। किंतु, लगाई गई पूंजी पर आय में सुधार होने की बजाय गिरावट रही।

81. उपरोक्त को देखते हुए यह पाया जाता है कि:-

- (क) संबद्ध देश से आयात की मात्रा में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत के संदर्भ में वृद्धि हुई है;
- (ख) आयातकों का बाजार हिस्सा कम हो गया है जबकि पाटित आयातों का हिस्सा बढ़ गया है;
- (ग) आवेदकों को बिक्री उनकी अक्षतिकारी कीमत से कम कीमत पर करने को बाध्य होना पड़ा है।

#### ३. कारणात्मक संबंध

82. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II(v) में निर्धारित क्षति के निर्धारण संबंधी सिद्धांतों के अनुसार प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पाटित आयातों की वजह से हुई है। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिससे साथ ही घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों के कारण संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई।

#### पाटित आयातों का प्रभाव.

83. 1999-00 और जांच अवधि के बीच पाटित आयातों की मात्रा में काफी वृद्धि और घरेलू मांग में उसके तदनुरूपी हिस्से जो 1.62% से बढ़कर 6.40% हो गया, और साथ ही पाई गई कीमत कटौती (जांच अवधि के दौरान औसत आधार पर लगभग 6.34%) घरेलू उद्योग की आर्थिक स्थिति खराब होने के साथ साथ हुई। कीमत प्रभाव की जांच में यह देखा गया है कि सी आई एफ तथा लैंडेड मूल्यों में जांच अवधि के दौरान काफी गिरावट आ गई है। घरेलू उद्योग को लाभप्रदता में हास देखना पड़ा जिसे क्षति विश्लेषण अवधि तथा जांच अवधि में बढ़ती हुई मांग की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए। पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से गिरावट का दबाव आया जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसी स्थिति में कीमतों में गिरावट (12.14%) आई जबकि उत्पादन लागत में लगभग 9.78% की गिरावट रही।
84. प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध देश से आयात कीमतों की वजह से घरेलू उत्पाद की कीमतों में कटौती हुई है जिससे घरेलू उद्योग को अपनी

अक्षतिकारी कीमत से कम कीमत पर बिक्री करने को बाध्य होना पड़ा जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग उन्हें पूरा नहीं कर सका। घरेलू उद्योग की विभिन्न आर्थिक विषय-सूचियों पर पाठित आयातों के प्रभाव की जांच इन जांच परिणामों में क्षति के संबंध में की गई है। अतः यह अस्थायी तौर पर समझा जाता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देश से पाठित आयातों के नकारात्मक प्रभाव के कारण हुई है।

### अन्य कारकों के प्रभाव

85. पाठित आयातों से इतर किन्हीं ज्ञात कारकों की जांच में जिनसे साथ ही घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, प्राधिकारी ने अन्य तीसरे देशों से संबद्ध माल की मात्रा तथा कीमतों के आयात की जांच की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार चीन जन.गण. से इतर तीसरे देशों के उद्भव के समान उत्पाद की कुल आयात मात्रा जो 1999-2000 में 15632 मी.टन रही थी बढ़कर जांच अवधि में लगभग 15835 मी.टन हो गई और कुल आयातों में उनका हिस्सा 1999-2000 में 93.89% से बढ़कर जांच अवधि में 76.45% हो गया। मांग में तीसरे देशों से आयातों का हिस्सा जो 1999-2000 में 24.56% रहा था बढ़कर जांच अवधि में 20.78% हो गया। इन आयातों की भारित औसत लैंडेड कीमतें जांच-अवधि में संबद्ध देश की कीमतों की तुलना में काफी अधिक रही और उससे नकारात्मक कीमत कटौती रही।
86. ऐसा लगा था कि डीजीसीआईएस के अनुसार चीन ताइपेई, थाईलैंड, चैक गणराज्य तथा कोरिया जन.गण. के मूल के आयातों का हिस्सा कुल आयात मात्रा के 3% से भी अधिक रहा। किंतु, चैक गणराज्य तथा चीन ताइपे से संबद्ध माल के लैंडेड मूल्य घरेलू उद्योग की कीमतों से अधिक रहे और चीन जन.गण. की लैंडिड कीमतों से काफी अधिक रहे। कोरिया जन.गण. तथा थाईलैंड से संबंधित सीआईएफ कीमतें अपेक्षतया कम पाई गई। प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है।
87. इस उत्पाद के लिए मध्यावधि समीक्षा जांच के समय यह पाया गया कि चीन से होने वाले आयात उस समय जांच के अधीन तीसरे देशों (कोरिया, इंडोनेशिया, ताइवान तथा थाईलैंड) की तुलना में कम कीमत पर हुए। यह भी पाया गया था कि उन देशों से होने वाले आयातों की लैंडेड कीमत चीन

की लैंडेड कीमत से होने वाले आयात और घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली की तुलना में अधिक रही। अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उस कार्रवाई में यह निष्कर्ष दिया गया था कि पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं रहा।

88. वर्तमान जांच अवधि में डीजीसीआईएस के प्रकाशित आंकड़ों से और घरेलू उद्योग द्वारा दर्ज आवेदन-पत्र से यह प्रतीत होगा कि थाईलैंड से आयात कीमत चीन से आयात कीमत की तुलना में कम रही। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदे-वार आयात आंकड़ों को प्राप्त किया और उनकी विस्तार से जांच की। यह विश्लेषण आईबीआईएस आंकड़ों के आधार पर भी किया गया। यह पाया गया कि थाईलैंड से आयात मूल रूप से गिफ्ट श्रेणी के संबंध में हुए। थाईलैंड से संगत अवधि में औसत आयात कीमत जो 132 रु० प्रति किग्रा. थी, की तुलना चीन से आयात कीमत जो 126 रु० प्रति किग्रा. रही से की गई।
89. आवेदकों द्वारा प्रस्तुत जानकारी की भी विस्तार से जांच की गई। आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सारांश विवरण-पत्र से यह प्रतीत होगा कि थाईलैंड से आयात कीमत चीन की आयात कीमत की तुलना में कम रही। किंतु यह पाया जाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा उल्लिखित चीन की आयात कीमत में सीटीसी के आयात भी शामिल हैं जोकि एक अलग श्रेणी है। सी टी सी के आंकड़े इस जानकारी से अलग करने पर यह पाया जाता है कि चीन से औसत आयात कीमत थाईलैंड से आयात कीमत की तुलना में कम है।
90. याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदे-वार आयात आंकड़ों(गौण ज्ञातों से संकलित)से डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध सौदे-वार आयात आंकड़ों की तुलना करने से मालूम होता है कि थाईलैंड से आयात कीमत करीब करीब वही है। इस प्रकार, यह साक्ष्य है कि चीन से आयात कीमत थाईलैंड से आयात कीमत की तुलना में कम है।
91. कोरिया जन.गण. के संबंध में प्राधिकारी नोट करता है कि कोरिया से आयात मात्रा में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान निरंतर गिरावट रही। डीजीसीआईएस तथा आईबीआईएस आंकड़ों के अनुसार अप्रैल-जून, 2003 की तिमाही के दौरान कोरिया से कोई आयात नहीं किया गया। कोरिया से निर्यात सितंबर,

2002 के बाद लगभग शून्य रहे किंतु यह आयात फरवरी, 2003 से पुनः शुरू हो गए। किंतु, इस अवधि के दौरान कीमतें चीन की कीमतों की तुलना में अधिक रहीं। जांच अवधि में आरंभ में आयात होने की वजह से जांच अवधि के लिए औसत कीमत पूर्ण रूप से कम रही। सौदे-वार विश्लेषण यह दर्शाता है कि अप्रैल-सितम्बर, 2002 की अवधि के दौरान आयात मै0 अपोलो द्वारा किए गए और इससे निर्यात एक संविदा तथा एक कीमत के तहत स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये निर्यात कुछ पिछले संविदा दायित्वों की वजह से किए गए। अन्य प्रयोक्ताओं द्वारा किए गए आयात तुलनात्मक रूप से अधिक कीमतों पर किए गए।

- 92. अतः प्राधिकारी नोट करता है कि अन्य देशों से एनटीसीएफ की आयात मात्रा या तो न्यूनतम से अधिक अथवा काफी अधिक कीमतों पर खरीदी गई। घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी, जिसमें पोलिमराइजेशन, कटाई, ट्रूस्टिंग, बुनाई तथा डीपिंग की प्रक्रिया शामिल है, संबद्ध माल के उत्पादन के लिए विश्व में कहीं और प्रयुक्त प्रौद्योगिकी के समान है। घरेलू उद्योग संबद्ध माल के कोई निर्यात बिक्री नहीं करता है। घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति किसी और अन्य कारकों की वजह से नहीं हुई बताई गई है।
- 93. भारत में एनटीसीएफ की मांग में कोई विरोध नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होती। वास्तव में, मांग में वृद्धि हुई है। चीन जन.गण. से आयात में वृद्धि समग्र अर्थ में हुई है और यह भारत में उत्पादन तथा खपत से संबंधित है जहां मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है, वहीं पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है।
- 94. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे
- 95. पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन को समाप्त करना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो और भारतीय बाजार में मुक्त तथा स्वच्छ प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित करना है।
- 96. यह मान्यता है कि पाटनरोधी शुल्कों के लगाए जाने से संबद्ध माल के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद की कीमत पर बुरा असर पड़ेगा और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ेगा। किंतु, भारतीय बाजार

में प्रतिस्पर्धा में पाटनरोधी उपायों से गिरावट नहीं आएगी, विशेष रूप से यदि पाटनरोधी शुल्क की राशि एक ऐसी आवश्यक राशि तक सीमित रखी जाती है जिससे घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में कमी लाई जा सके। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों से पाटन-पद्धतियों से कमाए गए अनुचित लाभ को समाप्ति किया जा सकेगा, इससे घरेलू उद्योग की गिरावट रोकी जा सकेगी और एनटीसीएफ के उपभोक्ताओं को और अधिक विकल्प की उपलब्धता कायम रखने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी उपायों के कार्यान्वयन से संबद्ध देश से होने वाले आयात को किसी भी रूप में नहीं रोका जा सकेगा और इसिलए इससे उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

96. घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की राशि तय करने के प्रयोजनाथ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए भारत में एनटीसीएफ की यथोचित बिक्री कीमत पर भरोसा जताया है और ऐसा घरेलू उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के अनुकूल स्तर पर अनुकूल उत्पादन लागत पर विचार करते हुए किया गया है।

#### त. लैंडेड मूल्य

97. आयातों के लैंडेड मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्कों के मौजूदा स्तर को जोड़कर और 1% लैंडिंग प्रभारों को जोड़कर पाटन संबंधी पैरा में निर्धारित एनटीसीएफ की निर्यात कीमत के आधार पर किया जाता है जैसा कि ऊपर विस्तार से बताया गया है।

#### थ. निष्कर्ष

98. उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात् यह देखा जाता है कि;

- (क) उपर्युक्त पैरा ग(6) के तहत वर्णित सभी किस्मों के एनटीसीएफ जो चीन जन.गण. के मूल का अथवा वहां से निर्यातित हो, का भारत को निर्यात सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ,
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है,
- (ग) वास्तविक क्षति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

99. यह सिफारिश करने का निर्णय लिया गया है कि पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि, यदि लगाई जाए, के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को होने वाली वास्तविक क्षति समाप्त हो जाएगी। तदनुसार, यह प्रस्ताव है कि अन्तिम निर्धारण होने तक आईटीसी (एचएस) के 5902.10.00 और सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 59 के सीमा शुल्क उप शीर्ष संख्या 5902.10 के तहत आने वाले, चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सभी किस्मों के एनटीसीएफ पर केन्द्रीय सरकार द्वारा इस बारे में जारी होने वाली अधिसूचना की तारीख से अस्थाई पाटनरोधी शुल्क लगा दिया जाए। पाटनरोधी शुल्क की राशि नीचे दी गई सारणी के कामल 9 में उल्लिखित राशि होगी:-

| क्र. सं. | उप-शीर्ष अथवा टैरिफ | माल का विवरण | उदभव का देश                  | निर्यातक देश                 | उत्पादक | निर्यातक | राशि  | माप की इकाइ | मुद्रा |
|----------|---------------------|--------------|------------------------------|------------------------------|---------|----------|-------|-------------|--------|
| 1        | 2                   | 3            | 5                            | 6                            | 7       | 8        | 9     | 10          | 11     |
| 1        | 5902.10             | एनटीसी एफ    | चीन जन.गण.                   | चीन जन.गण.                   | कोई     | कोई      | 0. ६९ | कि.ग्रा.    | अम.डा. |
| 2        | 5902.10             | एनटीसी एफ    | चीन जन.गण                    | चीन जन.गण को छोड़कर अन्य देश | कोई     | कोई      | 0. ६९ | कि.ग्रा     | अम.डा. |
| 3        | 5902.10             | एनटीसी एफ    | चीन जन.गण को छोड़कर अन्य देश | चीन जन.गण                    | कोई     | कोई      | 0. ६९ | कि.ग्रा     | अम.डा. |

#### द. अगली प्रक्रिया:

100. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के पश्चात निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:

क. प्राधिकारी इन जांच परिणामों पर सभी इच्छुक पक्षकारों से टिप्पणियां आमंत्रित करता है और उन पर विचार अन्तिम जांच परिणामों में किया जाएगा,

ख. प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, आवेदक तथा अन्य सभी ज्ञात इच्छुक पक्षकारों को अलग से संबोधित किया जा रहा है जो इस अधिसूचना के जारी होने से चालीस दिनों के भीतर अपने-अपने विचार प्रस्तुत कर देंगे। कोई अन्य इच्छुक पक्षकार भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार प्रस्तुत कर सकेगा।

ग. प्राधिकारी सभी इच्छुक पक्षकारों को मौखिक निवेदन करने का अवसर प्रदान करेगा,

घ. प्राधिकारी अन्तिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों का खुलासा करेगा।

अधिकारी अन्तिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों का खुलासा करेगा। अभिजीत सेनगुप्ता, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Directorate General of Anti-Dumping & Allied Duties)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 30th June, 2004

**Subject : Anti-dumping investigations concerning import of Nylon Tyre Cord Fabric (NTCF) originating in or exported from China PR—Preliminary Findings.**

**F. No. 14/20/2003-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

#### A. PROCEDURE:

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:

- i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from the Association of Synthetic Fibre Industry (ASFI) on behalf of all the members of the Association, alleging dumping of Nylon Tyre Cord Fabric (NTCF) originating in or exported from China PR.
- ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the applicant. The application was thereafter considered as properly documented.
- iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant decided to initiate investigations against alleged dumping of imports of NTCF originating in or exported from China PR.
- iv) The Authority notified the Embassy of the subject country about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules.
- v) The Authority issued a Public Notice dated 29<sup>th</sup> October, 2003, published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of NTCF classified under Chapter 59, Custom subheading no. 5902.10.00 of the Custom Tariff Act originating in or exported from China PR.
- vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporters/importers of NTCF (whose details were made available by the applicant) and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.

- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to provide details of imports of NTCF. Request was also made to DGCIS, Kolkata to provide details of transaction-wise imports made in India of the said article during the period of investigation alongwith Bills of Entry numbers and dates, country of origin, description of the imported subject goods, volume and value of import and the names and addresses of the importers.
- viii) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassy of China PR in accordance with Rule 6(3) supra.
- ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters in China PR in accordance with Rule 6(4);

### **China PR**

- Ningbo Nylon Company Limited,  
Jinlun Group Office Building,  
Zonghan St.,  
Cixi City,  
Zhejiang Province,  
China PR.
- Baling Petrochemicals  
Yongshan Petrochemical Works  
Yueyang  
Hunan
- Jiangsu Steed  
Jiangsu Junma Group,  
Zhangjiagang Huayu Chemical Company Limited  
80-River East Road  
Chenhang Town  
Zhangjiagang City
- Qingdao Textile Mills  
22-Hai-An Road,  
Qingdou.
- Weifang Great Dragon Chemical Fibre Co. Ltd.  
Wennan Road, Anqiu,  
Shandong Province,  
China PR.
- Jiangsu Qunfa Chemical Co., Ltd.  
3 Taiping Beilu,

Yangzhou,  
Jiangsu Province, China PR.

- x) The Embassy of the People's Republic of China in India, was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letters and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith the names and addresses of the exporters.
- xi) A questionnaire for according market economy treatment was forwarded to all the known exporters and the Embassy of the Peoples' Republic of China. While, for the purpose of initiation, the normal value in China PR was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR, the authority informed the known exporters that it proposed to examine the claim of the applicant in the light of para (7) & (8) of Annexure-II of the Anti-Dumping Rules as amended. The concerned exporters / producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information / sufficient evidence as mentioned in subparagraph (3) of paragraph 8 to enable the Designated Authority to consider whether market economy treatment could be granted to cooperating exporters / producers who could demonstrate that they satisfied the criteria stipulated in the said paragraph.
- xii) A questionnaire was sent to the following known importers/users of NTCF calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);
  - Automotive Tyre Manufacturers' Association (ATMA)
  - Birla Tyres, Kolkata-700019.
  - CEAT LIMITED, Mumbai-400018.
  - Dunlop India Ltd., Kolkata-700016.
  - J.K.Industries Ltd., New Delhi - 110 002
  - MRF Ltd., Chennai-600006.
  - Vikrant Tyres Ltd., Mysore - 570002
- xiii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xiv) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) on the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

- xv) \*\*\* In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority upon being satisfied as to its confidentiality, under the Rules.
- xvi) The investigation of dumping and injury covered the period from 1<sup>st</sup> April, 2002 to 30<sup>th</sup> June, 2003 (15 months) which is referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'. The examination of trends relevant for the analysis of injury covered the years from 1999-2000 to the period of investigation (injury analysis period).

## B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- 2. The product under consideration in the present case is Nylon Tyre Cord Fabric (NTCF) originating in or exported from Peoples Republic of China. The subject goods is a fabric of nylon, meant largely for tyre cord. NTCF finds application in different kinds of automotive tyres such as bus & truck tyres, two wheeler tyres, cycle tyres, light commercial vehicles tyres, animal driven vehicles etc.
- 3. Nylon Tyre Cord fabric is produced using different deniers of yarn. The fabric is used for reinforcement of tyres. The product is sold as "Grey fabric" and also "Dipped fabric". The Indian Tyre Industry is buying both grey and dipped fabric. Irrespective of the categorization, tariff classification of NTCF is common to both. All types of NTCF are within the scope of the product under consideration and are classified under Chapter 59, Custom subheading no 5902.10.00 of the Custom Tariff Act. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

## C. LIKE ARTICLE

- 4. The product under consideration has included all types within its scope as given in Para B above. The domestic industry also manufactures a small quantity of Cycle Tyre Cord as given in their application apart from grey and dipped NTCF. Interested parties have referred to the non-confidential version of the application as showing that the domestic industry has the data for different types of NTCF namely, Grey, Dipped and CTC. The quantum of CTC fabric produced by the domestic industry was 1.22% of the total production of the subject goods by the domestic industry during the POI. Although injury analysis has been made for all the above-cited categories of the subject goods, the final analysis of dumping, injury and causal link has been made with respect to the product under consideration, i.e., Nylon Tyre Cord Fabric.
- 5. In order to establish that Nylon Tyre Cord Fabric (NTCF) produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from China PR, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority.
- 6. The Authority also finds that there is no argument disputing that Nylon Tyre Cord Fabric (NTCF) produced by the domestic industry has characteristics closely

resembling the imported material and is substitutable by NTCF imported from the subject country both commercially and technically. NTCF produced by the domestic industry has been treated as Like Article to the product exported from China PR within the meaning of Rule 2(d).

#### **D. DOMESTIC INDUSTRY**

7. The Association of Synthetic Fibre Industries (ASFI) New Delhi has filed the petition on behalf of M/s SRF Limited, Chennai, M/s NRC Limited Mumbai, M/s Century Enka Limited Pune, and M/s Nirlon Ltd. Mumbai who are the producers of NTCF in India and who are the members of the association.
8. The details of quantities produced by domestic producers are given in the table below:-

|                         | 1999-2000    | 2000-01      | 2001-02      | POI          | POI<br>(annl) |
|-------------------------|--------------|--------------|--------------|--------------|---------------|
| <b>Production (MT)</b>  |              |              |              |              |               |
| <b>Grey</b>             | <b>41015</b> | <b>38690</b> | <b>42352</b> | <b>61620</b> | <b>49296</b>  |
| <b>Dipped</b>           | <b>4229</b>  | <b>2644</b>  | <b>4478</b>  | <b>9528</b>  | <b>7622</b>   |
| <b>CTC</b>              | <b>744</b>   | <b>728</b>   | <b>648</b>   | <b>877</b>   | <b>702</b>    |
| <b>Total production</b> | <b>45988</b> | <b>42062</b> | <b>47478</b> | <b>72025</b> | <b>57620</b>  |

9. The applicants account for 100% of the total domestic production of the subject goods in the country and therefore satisfy the standing to file the present petition.
10. The Authority notes therefore that the applicants constitute "domestic industry" and have the required standing to file the present petition under the Rules.

#### **E. SUBMISSION OF INFORMATION**

11. Arguments raised by interested parties after the notification of the initiation of these investigations are reflected in these findings to the extent that they are considered relevant to these investigations.

#### **F. VIEWS GIVEN BY DOMESTIC INDUSTRY**

12. The applicants have raised the following major issues in their application and in their subsequent submissions:
  - (i) M/s. SRF Ltd., M/s. NRC Ltd., M/s. Century Enka Ltd., & M/s. Nirlon Ltd. are the producers of subject goods (NTCF) in India, who are members of the Association and who have in particular supported the application.
  - (ii) The applicants have stated that there is no viable substitute for the product.
  - (iii) The applicants consider that the subject goods are being dumped by the exporters and producers in the People's Republic of China

- (iv) The subject country has been exporting the product under consideration since quite sometime (more than four years). But the exports started increasing significantly since 2000-01 due to continuous reduction in the export price. Dumping intensified with the imposition of Anti Dumping Duty earlier on other sources.
- (v) China produces and exports both dipped fabric as also grey fabric. The price difference between the dipped fabric and grey fabric is as high as 15-20%. Such being the case, combined information on average basis for dipped and grey imports of NTCF from China would in any case not be appropriate and would not be useful for establishing correct export price. In addition to grey and dipped fabric used for main segments of tyre, China has been exporting cycle tyre cord fabric also. The construction of this fabric is normally 840D/1 and the cost of production of this fabric is higher than fabric used for other category of tyres and this fabric prices are normally much higher than the fabric meant for other heavier duty tyre cord applications.
- (vi) Applicant Companies broadly make two types of subject goods - Grey NTCF and Dipped NTCF. M/s SRF manufactures CTC fabric. Further, the product is produced in a number of deniers. Different forms of the subject goods are produced to meet specific customer requirements. The product, irrespective of various denierage/forms —
- ◆ Has essentially similar product characteristics,
  - ◆ Is produced using the same production process and raw materials, and
  - ◆ Is categorized under a single Custom Tariff code.
- All these various types of subject goods are within the scope of the present investigation.
- (vii) There is no known difference in the subject goods (NTCF) exported from China PR and that produced by the applicant companies. Subject goods in various grades produced by the domestic industry and imported from China PR are comparable in terms of essential product characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the subject goods. Consumers can use and are using the two interchangeably. Imported and domestic subject goods are technically and commercially substitutable. The applicant submits that the subject goods produced by the applicant companies and the subject goods imported from China PR are like articles within the meaning of the anti-dumping rules.
- (viii) There is no known difference in the technology adopted by the applicant companies and by the producers in China PR. Production technology as also production process employed by the domestic industry and the exporters from China PR are comparable even though every manufacturer fine-tunes its production process according to available facilities and necessities.

- (ix) In addition to the material injury already inflicted on the domestic industry, imports from the subject country are posing threat of material injury to the domestic industry.
- (a) There is significant increase in the import volumes (imports more than tripled in the proposed POI as compared to previous year). This increase in imports is in spite of best efforts of the Indian producers to sell their material. Thus, the increase would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering matching prices.
  - (b) Price undercutting is significant.
  - (c) Capacity created by the producers in the subject country are far more than their domestic demand. These producers are in fact saddled with excess capacity.
  - (d) While inventories of the article with the domestic industry are not showing significant increase due to concerted efforts of Indian producers to reduce the inventories, Indian producers understand that the producers in the subject country are saddled with higher inventories.
  - (e) The applicants conducted extensive analysis of exports of NTCF world over by China PR. The following are relevant in this regard:

- Exports of NTCF from China world over have witnessed very significant increase, as would be seen from the information given below:

|         |   |          |
|---------|---|----------|
| 2000-01 | = | 15000 MT |
| 2001-02 | = | 16000 MT |
| 2002-03 | = | 25000 MT |

- China was earlier exporting this product primarily to Thailand. This has, however, now shifted to India, with exports to India becoming highest in volume.
- China's export price of the subject goods to India was de-facto the lowest. While the average price at which China was exporting world over was USD 2.77/kg, the average price at which the goods have been exported to India was USD 2.31/kg. in 2002-03. Similar was the trend for previous years also, as would be seen from the table below:

| China Export<br>NTCF Price (USD/kg.) | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
|--------------------------------------|---------|---------|---------|
| World average excluding India        | 3.24    | 2.97    | 2.77    |
| Export Price to India                | 3.15    | 2.86    | 2.31    |
| Price differential                   | 0.09    | 0.11    | 0.46    |

It would be seen that not only did the price differential always exist between the export price to India and export price to the rest of the world but the price differential consistently increased. Under the above circumstances, threat of injury is not a conjecture or remote possibility but real and imminent.

- One of the vital facts to note is that Indian demand is quite low considering world's standard (demand has in fact shown some increase only recently), the production capacities of individual producers in China PR are quite significant in the light of Indian demand. In fact, Indian producers understand that some of the Chinese producers have plant sizes as high as entire Indian demand.

## G. VIEWS OF IMPORTERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

### (A) Importers views

#### I. Automotive Tyre Manufacturers' Association (ATMA)/M/s Ningbo Nylon Co. Ltd.

13. The Designated Authority is requested to kindly ask the domestic industry to provide certain information kept confidential by the domestic industry in their application. If the domestic industry is not agreeable to disclose the so called confidential information, the same may be disregarded in terms of Rule 7 (3) read with the latest judgement of the Hon'ble Supreme Court in the case of M/s. Sterlite Industries (India) Ltd. v/s. Designated Authority in Civil Appeal No. 5173-5175/2001.

(i) The domestic industry has failed to fulfill the requirements of Rule 5 (1) and (2) concerning the tests of sufficiency, adequacy and accuracy of evidence as obligated under the Rules. These are:

- (a) Import information should have been provided in the non-confidential version of the Application. No confidentiality can be claimed on data which is available in public domain. The Designated Authority ought to have examined the import information as received as supplied by the secondary source namely IBIS.
- (b) The non-confidential version of the Application contains data only for the period Apr-00 to Mar-03 and not for the entire period of investigation.
- (c) The data provided by the domestic industry in Proforma IV A has not been indexed properly.
- (d) The domestic industry has indexed data on which no confidentiality can be claimed in terms of the provisions of the WTO Agreement on Anti-Dumping or the Anti-Dumping Rules in India. For instance, the standards as laid down under the legal provisions do not permit confidentiality on information such as capacity, production, import data etc. Actual figures must be disclosed to enable the user industry to offer its comments on product-wise analysis.

- (e) No information has been provided for the grade-wise profitability for the product under consideration.
- (f) No information has been provided with regard to the grade-wise price underselling and Proforma IV-B provided in the non-confidential version indicates only the average price underselling for all types of NTCF together.
- (g) Para (vi) of Annexure II of the Anti-Dumping Rules clearly envisages separate injury analysis of different types of like articles when available data permit the separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. In the instant case, the non-confidential version itself shows that the domestic industry has all the data for different types of NTCF namely, Grey, Dipped and CTC. There is, therefore, no reason for not carrying out the injury analysis separately for each of the above types of "like article".
- (ii) **Constructed Normal Value**  
**The domestic industry has not given any details of the calculation of the constructed normal value and the export price in the non-confidential version.**
- (iii) **Absence of Injury**
- (a) Production: The production of the domestic industry has gone up by about 24% for Grey, 200% for Dipped and 348% for CTC during the period of investigation.
- (b) Capacity and Capacity Utilisation: Admittedly, the capacity of the domestic industry has increased over the years and therefore, it is not even claimed to be a factor of injury. The capacity utilisation for Grey has gone up by about 10%, 200% for Dipped and about 3% for CTC in the POI as compared to the base period.
- (c) Sales: The domestic sales of the domestic industry have gone up by about 23% for Grey, 236% for Dipped and 6% for CTC during the POI.
- (d) Inventories: Admittedly, the stocks of the domestic industry have declined from an index of 100 in 2000-01 to 44.95 in 2002-03.
- (e) Productivity: Productivity has increased from an index of 100 in 2000-01 to 123.8 in 2002-03.
- (f) Growth: The Domestic Industry has indicated the growth in sales quantity as 5461 MT in 2000-01, 2747 MT in 2001-02 and 6407 in 2002-03.
- (g) Employment: It has been stated by the domestic industry that they have been forced to reduce employment whereas it should have increased due

to additions to the capacities. It is respectfully submitted that the domestic industry have given misleading information to the Designated Authority. Kind attention of the Hon'ble Designated Authority is invited to the relevant extracts of the balance sheet of M/s. Nirlon Ltd. one of the constituent of the domestic industry, for the year 2002-03, reproduced below:

"The Company in its ongoing drive to bring down employment costs has offered Voluntary Retirement/Pension Schemes to 938 employees between 1993-2003 costing Rs. 2150 Lacs."

- (h) Selling Price: The selling price of Grey Fabric has improved to an index of 86.34 in 2002-03 from 85.78 in 2001-02. While the selling price for CTC has changed very marginally the selling price for dipped fabric has gone up. It may be appreciated that such marginal fluctuations are bound to occur in any market governed by forces of demand and supply.
- (i) Profit: The domestic industry has not given the total profitability figures. Instead, the domestic industry has given the profitability per MT. The overall profitability of all the units constituting the domestic industry is required to be provided.
- (j) Ability to raise capital investments: The domestic industry has not advanced any reason much less evidence to demonstrate that their ability to raise fresh investment has been adversely affected. One of the applicant companies has enhanced its capacities and it is further stated that "more additions of capacities are being planned".
- (k) Market Share: A plain analysis of the information supplied in proforma IV A indicates that the market share of the domestic industry has increased from 70.01% in 2000-01 to 73.18% during 2002-03, an increase of 3.17%. At the same time, while the imports from other countries have declined by 7.85%, the Chinese imports have risen by 4.68% only during the period of investigation.
- (l) Return on investments: No claim has been made by the domestic industry on this important factor of injury.
- (m) Cash flow: It has been claimed that the Indian producers are still faced with sub-optimal cash flow even though the same is positive.
- (n) Wages: No injury has been claimed on account of this factor.
- (o) Factors affecting domestic prices: The domestic industry has not submitted any information nor made any claim with regard to factors affecting domestic prices.

(iv) Absence of Causal Link

The alleged injury, if any, to the domestic industry cannot be attributed to the alleged dumped imports.

- (a) The domestic industry has given incomplete information with regard to the process of negotiation and determination of prices between Indian producers and the user industry. The exporters understand that the prices of Chinese imports never formed a basis for determination of the domestic prices.
- (b) From the data submitted by the domestic industry itself, it is clear that the cif value of Chinese imports is higher than the cif value of imports from other countries against whom no case for investigation has been filed by the domestic industry.
- (c) It is admitted by the domestic industry that their profitability deteriorated even after imposition of anti-dumping duty on dumped imports against four countries in the earlier case.

14. Examination by the Authority:

The Authority has taken note of the submissions made by ATMA and Ningbo Nylon and has addressed them in the section on injury in these findings. The Authority has relied upon transaction-wise import data of the subject goods made available by the DGCIS. The non-confidential version of the application for the POI and data provided by the domestic industry in proforma IV A (indexed form) is available in the public file. Grade-wise profitability and injury analysis for each type of the product under consideration has been carried out for the injury analysis period and the period of investigation.

II. **Birla Tyres**

- (i) Birla Tyres manufactures tyres, tubes and flaps and is an importer on own account.
- (ii) The information relating to imports in India has been provided by them for the period of investigation and the two previous years.
- (iii) NTCF is stated to have not been imported under advance licence during this period.

15. Examination by the Authority

- (i) While no imports of the subject goods were made by them from China PR during Apr-00 - Mar-01 and Apr-01 - Mar-02, a quantity of \*\*\* kg of a landed value of \*\*\*(Rs \*\*\*/kg) was imported from M/s Ningbo Jinlun, one of the respondent exporters from China PR and \*\*\* kg at landed value of \*\*\*(Rs \*\*\*/kg) was imported from M/s Shanghai Chemical.
- (ii) The Company has furnished a report regarding the quantity, value and rate details of largest purchase from domestic producers viz., M/s. Century Enka.

In 2000-01, a quantity of \*\*\* kg was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg; and in 2001-02 a quantity of \*\*\* kg. was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg. In the POI, a quantity of \*\*\* kg. was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg. These purchases were all of 1680/2 denier nylon fabric. Domestic prices declined by 16.02% in the POI as compared to 2000-01.

- (iii) For 1260/2 Denier Nylon Fabric, a quantity of \*\*\* kg was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg; and in 2001-02 a quantity of \*\*\* kg. was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg. In the POI, a quantity of \*\*\*kg. was purchased at a weighted average rate of Rs. \*\*\*/kg. Domestic prices declined by 17.66% in the POI as compared to 2000-01.

### III. MRF Limited, Chennai

MRF Ltd. is a manufacturer of automobile tyres, tubes, flaps, tread rubber, other rubber products etc. In their response to the Importers Questionnaire they have stated that purchase of NTCF from overseas suppliers is done on a quarterly basis.

#### 16. Examination by Authority:

- (i) A quantity of \*\*\* kg. of a cif value of Rs. \*\*\*/kg. was imported from China PR in 2000-01 and a quantity of \*\*\* kg. of a cif value of Rs. \*\*\*/kg was imported from China PR during 2001-02. In the POI, a quantum of \*\*\*kg. was imported at a significantly lower cif value of Rs. \*\*\*/kg from China PR. It is seen that cif prices declined by 25.75% in the POI as compared to 2000-01. While no imports were made from Chinese Taipei during the POI, imports from Indonesia and Korea RP during the POI were at higher landed values which were Rs. \*\*\*/kg. and Rs. \*\*\*/kg. respectively. As against this, the landed value from China PR was far lower at Rs. \*\*\*/kg.
- (ii) The subject goods from domestic producers were at rates which gradually declined from 2000-01 till the POI. These rates were Rs. \*\*\*/kg in 2000-01, Rs. \*\*\*/kg. in 2001-02 and Rs. \*\*\*/kg. in the POI. Domestic prices declined by 19.33% in the POI as compared to 2000-01.

### IV. JK Industries Ltd., New Delhi.

The importer has pointed out that Bias Tyres manufacturing is currently concentrating only in Asia and Nylon Tyre Cord which is required for Bias Tyres is mainly manufactured in Asia. In the developed economies, mainly USA and Europe, there is more radialisation and where polyester is used in passenger radial tyres and steel tyre cord in truck and bus radial tyres. Thus in these countries availability of nylon fabric is very limited. China has emerged as a new competitive source and JK Industries is still in the process of trials for approval of the material.

**17. Examination by Authority:**

The company imported a quantity of \*\*\* kg as duty paid imports during the POI at a cif price of Rs. \*\*\*/kg, and a landed value of Rs. \*\*\*/kg from Ningbo Jinlun Import and Export Company Ltd., China. The cif value and landed prices were significantly lower than the landed prices from Korea RP, Indonesia and Chinese Taipei which were Rs. \*\*\*/kg, \*\*\*/kg, and Rs. \*\*\*/kg, respectively in the POI. It is further seen that the landed values from China in the POI have declined significantly in comparison with the landed value of the subject goods in 2001-02 which was Rs. \*\*\*/kg, i.e. landed value from China PR declined by 16.23% in the POI.

**V. Hesar Marketing & Consultants Pvt. Ltd., Chennai**

- (i) This company is functioning as agents for Welfang Great Dragon Chemical Fibre Co. Ltd. and Steed Chemical Fibre Limited Company who are manufacturers of the subject goods in China PR.
- (ii) This company would like to be a party to the proceedings of the anti-dumping case and would like to represent the above two companies during the hearing/proceedings.

**(B) Exporters Views**

**I. Ningbo Nylon Co.Ltd**

The submissions of Ningbo Nylon are similar to those given by ATMA and may please be seen at Para G-I above.

**II. Welfang Great Dragon Chemical Fibre Company Ltd. and Shandong Polytex Chemical Fibre Company Ltd.**

- (i) The exporter intends to prove that there is no injury being caused to the domestic industry in India by the export of NTCF by these companies and the exports are being made on a purely competitive basis. This is in fact proved further by the fact that has been recorded by the petitioners that the exports of NTCF from China world over have witnessed very significant increase. The fact that exports of NTCF have recorded a significant world wide increase is certainly indicative of the capacity of the Chinese producers, including these companies, to compete on a global scale and should not be confused with dumping.
- (ii) The normal value should be determined under Para 1 to 6 of the Annexure to the AD Rules and not be subjected to the constructed cost approach. Polytex has made available all the relevant material for this purpose as part of its replies to the Exporters questionnaire and its separate statement on working under market condition and further as a cooperating party will make available any additional material that may be needed.

- (iii) As per the P&L Statements enclosed, these companies have been making profits and as such its sales prices have been determined strictly by the prevailing market forces, competition and profitability. It is true that the market price of NTCF in the domestic market has been coming down and this has also been reflected in the FOB export price of NTCF. This has been the result of a sharp fall in raw material prices.
- (iv) The assumptions by the petitioners 'that some of the Chinese producers have plant size as high as the entire Indian demand, threat of dumping is not conjecture or a remote possibility and real and imminent' are mere conjecture based on fear of competition and an attempt to secure protection from competition rather than face the values of an open market condition.
- (v) The fear of the petitioner stems from the impact of facing competition and is established by the contention of the petitioners in the petition, that the Indian industry is being forced to benchmark its price to the prices 'being offered by Chinese producers. Reluctance of the Indian producers to do so is resulting in loss of business'.
- (vi) The price being charged for NTCF is significantly higher than the price at which the petitioner has claimed that imports from China PR are taking place and it is also clear that the prices being charged by the exporting companies do not vary from the average price shown by the petitioner for imports from Taiwan, Indonesia, Korea or Thailand.

### **III. Jiangsu Qunfa Chemical Company Ltd.**

- (i) While Jiangsu is not a cited party in this petition, they would like to cooperate fully with the Authority in these investigations.
- (ii) In general, the exporter has put forward the same arguments as given by Weifang Great Dragon Chemical Fibre Company Ltd. and Shandong Polytex Chemical Fibre Company Ltd. with regard to this anti-dumping investigation.

### **IV. Steed Chemical Fibre Company Ltd.**

- (i) This respondent has stated that they did not export the subject product directly or indirectly to the Indian market during the POI and thus neither dumped nor caused any injury to the Indian domestic industry.
- (ii) They are contemplating seeking a new shipper review after the final finding is made for the present investigation pursuant to Article 22 under Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995.
- (iii) Nonetheless they would like to cooperate with the present investigation and furnish relevant data if so required by DGAD.

## H. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

18. The submissions made by the applicants, exporters/producers and importers/user industry to the extent they are relevant under the Rules and have a bearing upon the case, have been examined and dealt with at appropriate places hereunder.

## I. EXAMINATION OF RESPONSE TO MARKET ECONOMY TREATMENT QUESTIONNAIRE

19. As communicated to the known exporters and to the Embassy of the People's Republic of China, the Authority proposes to examine the claim of the applicant of China PR being a non-market economy in the light of Para (7) and (8) of Annexure I of the Anti-Dumping Rules as amended.
20. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in subparagraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- (a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- (b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- (c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- (d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

### I. Response to the MET Questionnaire by M/s. Ningbo Nylon Company Ltd -

21. M/s. Ningbo Nylon Company Ltd. has furnished a reply to the MET questionnaire. The Authority notes that M/s. Ningbo Nylon Co. Ltd. is stated to be a wholly privately owned Chinese Ltd. liability company. In the articles of Association, it is stated that the amount of registered capital is \*\*\* RMB.in which \*\*\* is for legal person and \*\*\* shares are of internal staff and workers. 97.67% of total common shares was issued to the promoters of the company and 2.33% was issued to the staff and workers of the company. While the names of the promoter companies have been given, in which there are corporations concerned with rural development, local industry supply and

- marketing and municipal land reclamation and cultivation, the response does not clearly specify if any of these promoter companies are state owned.
22. As per information made available by the applicants and as available on the web site of Kingrin Group Co viz., <http://www.kingrin.com>, it appears that 97.78% of Ningbo Nylon is owned by a Company called Kingrin Corporation, which was established in 1982. 67.87% of the said Corporation is owned by village and township cooperatives. Kingrin Group Co. is stated to be the largest manufacturer and supplier of dipped nylon tyre cord fabrics in Asia and is one of the largest enterprises in China. Ningbo Nylon Co. Ltd., is stated to be the leading enterprise of the group. The Group has been in the first place among the township enterprises in Zhejiang province for 6 successive years. From all of the above, it cannot be concluded that there is absence of significant state interference in the respondent company.
23. The company has given English translations of Company Law, Labour Law and Accounting Law and the Articles of the Association.
24. The respondent company is buying about 60% of its major raw material i.e. Caprolactum from overseas markets, while the balance 40% is procured from within China. No response has been furnished in respect of the method of procurement from suppliers within China, nature of suppliers of raw materials and rates of raw materials procured which were specifically asked in the MET questionnaire.
25. It is stated that electricity and steam is procured from Cixi Jinlun Energy Development Co. Ltd., which is stated to be a privately owned company. However, no indication has been given in the form of data and evidence as regards prevailing market prices. Lack of indication as regards prevailing market prices is also applicable in respect of supply of water. The exchange rate is stated to have fluctuated between 1 USD = 8.27-8.28 RMB during the POI. There is one single exchange rate i.e. 8.2799 for purchase of inputs and conversion of the proceeds of export sale.
- II      Response to the MET Questionnaire by M/s. Weifang Great Dragon Chemical Fibre Company Ltd. and Shandong Polytex Chemical Fibre Company Ltd. and M/s Jiangsu Qunfa Chemical Company Ltd.
26. The exporters named above have provided a statement on operating under market economy conditions and have not provided replies to the specific questions in the MET questionnaire. In the case of Weifang Great Dragon, water, electricity and steam are supplied by companies which are all state owned. Jiansu Qunfa is a jointly owned company by the state and its own employees. In the case of Jiansu, the main raw materials and utilities are supplied by state owned companies.

**III. Response to the Exporters Questionnaire :**

27. The Authority has analysed the information furnished by the following co-operating manufacturers/producers in China PR.
  - (i) M/s Ningbo Nylon Company Ltd.
  - (ii) M/s Weifang Great Dragon Chemical Fibre Company Ltd. and Shandong Polytex Chemical Fibre Company Ltd..
  - (iii) M/s Jiangsu Qunfa Chemical Company Ltd.
28. The Authority notes that the information on cost of production and domestic sales by respondent exporters has revealed discrepancies in the claims made and data furnished. The test of domestic sales being in the ordinary course of trade is not possible in the absence of complete cost data and segregated domestic sales of the various types of the subject goods by the cooperating exporters thus, a determination on normal value as per provisions contained in Section 9A (1) (c) (i) and (ii) read with sub-rule 2 (i) and (ii) of Annexure 1 of the Anti-Dumping Rules cannot be made.
29. The Authority notes that respondent exporters/producers have furnished inadequate information/evidence in respect of the criteria for rebutting the presumption of a non-market economy as per sub-para (3) of para 8. The respondent exporter has merely made certain assertions and claims which are not supported by evidence. The Authority is therefore, unable to determine whether the cooperating firms are operating on market principles of cost and pricing structures.
30. The detailed deficiencies are being communicated to individual exporters on confidential basis. Any response to this will be examined during the progress of investigation and after due verification, wherever required.
31. In view of the above, Authority is unable to arrive at any determination with regard to normal value and cost of production of the subject goods in China PR as per data submitted by them.
32. As per the provisions of Annexure I, Paragraph 7 & 8 of the Anti Dumping Rules as amended from time to time, normal value should be determined as under:-
  - a. on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or
  - b. Where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin.
33. Since the data on cost of production and domestic sales has discrepancies and is not available for the types/grades of the subject goods, a determination on

normal value as per provisions contained in Section 9A (1) (c) (I) and (ii) read with sub-rule 2 (i) and (ii) of Annexure 1 of the Anti-Dumping Rules cannot be made. No clear understanding has emerged from the response to the MET questionnaire in respect of cost and pricing structures being in response to market signals. The Authority is therefore unable to apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 and is constrained to proceed as per provisions of Annexure I, Paragraph 7 & 8 of the Anti Dumping Rules as amended from time to time, for the purpose of these preliminary findings. The issue of granting market economy status or otherwise will be further examined during the course of the investigation and subject to compliance of deficiencies and verification of the further information provided.

## J. DUMPING

### 1. Normal Value

34. Under the circumstances, information available on the estimated cost of production plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for constucting the Normal value of the subject goods in China PR for Grey, Dipped and CTC type. The weighted average Normal value has been constructed after taking specific quantities of Grey, dipped and CTC. The authority notes that based on information available, weight of CTC in total imports is marginal. The weighted average thereof has been considered as USD \*\*\* per kg after considering the average exchange rate during POI of 1USD=Rs. 48.40.

### 2. Export Price

35. The ex-factory export price has been determined as per data available with the Authority. The authority has weighted average CIF price as well as wtd. Avg. FOB price for NTCF. After considering reasonable adjustment on account of inland freight only, the weighted average ex-factory export price for NTCF comes to USD\*\*\* per kg. The average exchange rate of Rs 48.40=1USD during the period of investigation has been adopted.

### Dumping Margin

36. This gives a weighted average dumping margin of 41% and USD\*\*\* per kg for NTCF.

## K. INJURY

37. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has

been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

38. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.

**(A) Quantum of Imports (as per DGCIS) :-**

|                                   | 1999-2000       |               | 2000-01         |               | 2001-02         |               | POI             |               | POI (annl)      |               |
|-----------------------------------|-----------------|---------------|-----------------|---------------|-----------------|---------------|-----------------|---------------|-----------------|---------------|
|                                   | Qty             | Unit Price    |
| <b>Individual Country Imports</b> |                 |               |                 |               |                 |               |                 |               |                 |               |
| China PR                          | 1017.08         | 124.3         | 1984.56         | 120.74        | 1677.04         | 138.34        | 6095.79         | 116.08        | 4876.63         | 116.08        |
| Other Countries                   | 15632.35        | 126.32        | 16267.99        | 149.13        | 12521.88        | 135.87        | 19793.77        | 124.99        | 15835.01        | 124.99        |
| <b>Total imports</b>              | <b>16649.43</b> | <b>126.20</b> | <b>18252.55</b> | <b>146.04</b> | <b>14198.92</b> | <b>136.16</b> | <b>25889.56</b> | <b>122.89</b> | <b>20711.65</b> | <b>122.89</b> |
| <b>Market Share</b>               |                 |               |                 |               |                 |               |                 |               |                 |               |
| China                             | 6.11%           |               | 10.87%          |               | 11.81%          |               | 23.55%          |               | 23.55%          |               |
| Others                            | 93.89%          |               | 89.13%          |               | 88.19%          |               | 76.45%          |               | 76.45%          |               |

39. The Authority has relied upon DGCIS data. The DGCIS has also made available transaction-wise data for the POI. The Authority notes that as per transaction-wise data (ignoring abnormal transactions), the volume of imports and value of grey, dipped and CTC fabric (indexed) from the subject country was as follows:

| China PR     | Qty (MT)   | Value (Rs.) | Rate (cif Rs./kg.) |
|--------------|------------|-------------|--------------------|
| Grey Fabric  | 57         | 55          | 96                 |
| Dipped       | 36         | 38          | 104                |
| CTC          | 7          | 7           | 112                |
| <b>Total</b> | <b>100</b> | <b>100</b>  | <b>100</b>         |

40. The Authority notes that the share of China in total imports has increased from 6.11% in 1999-00 to 23.55% in the POI. The share of other countries has declined from 93.89% in the base year to 76.45% in the POI.

41. Although the Authority has relied upon DGCIS import data for the purpose of these provisional findings, the Authority notes that the actual imports of the subject goods from China PR are far higher. In this connection, the Authority has also examined the quantum of exports made available by China Customs as reflected in the World Trade Atlas, the details of which for the POI is reflected in the table below:

**Source: World Trade Atlas**

| China Customs | Qty (kg) | Value (Rs.) | Rs./kg |
|---------------|----------|-------------|--------|
| Apr-02        | 131513   | 16279000    | 123.78 |

|        |                |                  |               |
|--------|----------------|------------------|---------------|
| May-02 | 267360         | 29174000         | 109.12        |
| Jun-02 | 293269         | 33574000         | 114.48        |
| Jul-02 | 203311         | 23478000         | 115.48        |
| Aug-02 | 389666         | 41533000         | 106.59        |
| Sep-02 | 385597         | 42151000         | 109.31        |
| Oct-02 | 561010         | 62927000         | 112.17        |
| Nov-02 | 635692         | 69378000         | 109.14        |
| Dec-02 | 672172         | 74463000         | 110.78        |
| Jan-03 | 753053         | 85175000         | 113.11        |
| Feb-03 | 717198         | 80963000         | 112.89        |
| Mar-03 | 574485         | 64355000         | 112.02        |
| Apr-03 | 761759         | 85905000         | 112.77        |
| May-03 | 650924         | 72366000         | 111.17        |
| Jun-03 | 973510         | 109162000        | 112.13        |
|        | <b>7970519</b> | <b>890883000</b> | <b>111.77</b> |

42. The quantity reported for NTCF is much higher than that reported by the DGCIS and per unit weighted average prices are lower.
43. The Authority also notes that as per information given by the participating exporters, the volume of NTCF exported during the POI by them was 8427.308 MT. There could have been other companies also who might have exported the material and who have not responded to the Authority.

**(B) Demand :-**

|  | Qty:MT          |                 |                 |                 |                 |
|--|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| Sales  | 1999-2000       | 2000-01         | 2001-02         | POI             | POI (annl.)     |
| Grey   | 42036.29        | 38487.47        | 42641.1         | 59654.03        | 47723.23        |
| Dipped   | 4207.76         | 2069.65         | 4029.46         | 8852.42         | 7082.14         |
| CTC  | 744             | 728             | 648.45          | 876.84          | 701.47          |
| <b>Total Sales (Domestic Industry)</b>               | <b>46988.05</b> | <b>41285.12</b> | <b>47319.01</b> | <b>69383.29</b> | <b>55506.84</b> |
| <b>Total Imports (as per DGCIS)</b>                  | <b>16649.43</b> | <b>18252.55</b> | <b>14198.92</b> | <b>25889.56</b> | <b>20711.65</b> |
| Imports (China PR)                                   | 1017.08         | 1984.55         | 1677.05         | 6095.79         | 4876.63         |
| Imports (Other sources)                              | 15632.35        | 16267.99        | 12521.87        | 19793.78        | 15835.02        |
| <b>Demand</b>  | <b>63637.48</b> | <b>59537.66</b> | <b>61517.93</b> | <b>95272.86</b> | <b>76218.5</b>  |
| Share of domestic industry (petitioners) in Demand % | 73.84%          | 69.34%          | 76.92%          | 72.83%          | 72.83%          |
| Share of imports %                                   | 26.16%          | 30.66%          | 23.08%          | 27.17%          | 27.17%          |
| Share of dumped imports from China PR %              | 1.60%           | 3.33%           | 2.73%           | 6.40%           | 6.40%           |
| Share of Others %                                    | 24.56%          | 27.32%          | 20.35%          | 20.78%          | 20.78%          |
| <b>Domestic Production</b>                           | <b>45988</b>    | <b>42062</b>    | <b>47479</b>    | <b>72025</b>    | <b>57620</b>    |

|   |       |       |       |       |              |
|---|-------|-------|-------|-------|--------------|
| Share of China Imports relative to Production       | 2.21% | 4.72% | 3.53% | 8.46% | <b>8.46%</b> |
| Share of Imports from China relative to Consumption | 1.60% | 3.33% | 2.73% | 6.40% | 6.40%        |

44. The authority notes that in the injury analysis period, the demand increased by 19.77%, the production increased by 25.29% whereas the sales of domestic industry could increase by 18.13% only. The domestic industry's share in demand declined and share of imports have gone up marginally. The increase in the production of the domestic industry has not been matched with a corresponding increase in the domestic industry's share in demand. On the contrary, the domestic industry's share in demand has declined while that of China has registered a significant increase.
45. If imports from China are considered as per China Customs data reflected in World Trade Atlas, the share of China would be 9.57% in the period of investigation. Share of domestic industry and others in demand would further decline to 66.66% and 23.77% respectively in the POI.

| Particulars                                   | POI      |
|---|----------|
| Imports from China (as per World Trade Atlas) | 7970.52  |
| Imports Other sources (as per DGCIS)          | 19793.78 |
| Total Imports                                 | 27764.30 |
| Total Sales (Domestic Industry)               | 55506.84 |
| Demand  | 83271.14 |
| Share of Domestic industry                    | 66.66%   |
| Share of China                                | 9.57%    |
| Share of Others                               | 23.77%   |

46. The Authority also notes that as per Word Trade Atlas, exports of NTCF from China have increased from 2087 MT (April, 01 to June, 02) to 7971 MT during POI and to 12574 MT for the period April, 03 – April, 2004. It is noted that there are variations in the import data. The Authority proposes to examine these variations during the course of the investigation. However, for the purpose of the preliminary findings, the Authority has relied upon transaction-wise DGCIS data.

#### (C) Actual and Potential Decline in Market Share :-

47. The Authority notes that based on DGCIS data, market share of domestic industry declined marginally. The Authority also notes that there is a supply gap of approximately 18-20000 MT which has to be met by imports. However, the analysis of imports shows that share of dumped imports has increased substantially whereas imports from other sources have declined.

#### (D) Actual and Potential Decline in Sales :-

|            | 1999-2000 | 2000-2001 | 2001-2002 | POI (Ann) |
|------------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| Sales (MT) | 46988     | 41285     | 47319     | 55507     |

|                                    |     |         |         |        |
|------------------------------------|-----|---------|---------|--------|
| % Change                           |     | -12.14% | 14.61%  | 17.30% |
| Sales Realisation                  |     |         |         |        |
| Weighted Average (Rs./kg.)         | *** | ***     | ***     | ***    |
| Weighted Average (Rs./kg.) Indexed | 100 | 100.64  | 85.79   | 87.86  |
| % Change                           |     | 0.64%   | -14.75% | 2.42%  |

48. Corresponding with increase in demand (19.77%) the Sales have increased by 18.13% during POI over base year. There was a significant decline in realisation in 2001-02 which improved marginally by 2.42% in the POI as compared to the previous year. If the domestic industry had not sold the quantities actually sold in the POI, it would have resulted in increased inventory or curtailment of production levels achieved. Higher sales volume helped to mitigate the adverse impact of dumped imports. Thus though the volume of sales showed increase, the Weighted Average Sales Realisation showed decline of 12.13% during POI over the base year.

**(E) Production and Capacity Utilisation :-**

|                         | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | POI    | POI (annl) |
|-------------------------|-----------|---------|---------|--------|------------|
| Installed Capacity (MT) |           |         |         |        |            |
| Grey                    | 49600     | 50500   | 55126   | 73000  | 58400      |
| Dipped                  | 7680      | 7680    | 7680    | 9600   | 7680       |
| CTC                     | 1100      | 1100    | 1100    | 1375   | 1100       |
| Total                   | 58380     | 59280   | 63906   | 83975  | 67180      |
| Production (MT)         |           |         |         |        |            |
| Grey                    | 41015     | 38690   | 42352   | 61620  | 49296      |
| Dipped                  | 4229      | 2644    | 4478    | 9528   | 7622       |
| CTC                     | 744       | 728     | 648     | 877    | 701        |
| Total production        | 45988     | 42062   | 47478   | 72025  | 57619      |
| Capacity Utilisation %  | 78.77%    | 70.95%  | 74.29%  | 85.77% | 85.77%     |
| Grey                    | 82.69%    | 76.61%  | 76.83%  | 84.41% | 84.41%     |
| Dipped                  | 55.07%    | 34.43%  | 58.31%  | 99.25% | 99.24%     |
| CTC                     | 67.64%    | 66.18%  | 58.95%  | 63.77% | 63.77%     |

49. The capacities with the applicants have increased over the years due to enhancement by one of the applicant companies and de-bottlenecking efforts by the domestic industry. Demand for the subject goods in India was expected to increase given the production levels estimated by automobile companies. Domestic industry was aware of this expected boom and had been gearing up to cater to this demand. However, in spite of increase in demand by 19.77%, the domestic industry's share has not increased correspondingly.
50. The average capacity utilisation for the subject goods by the domestic industry has improved by 8.9% from 1999-2000 till the POI.

51. Higher output by the domestic industry has been accompanied by increased sales volumes corresponding to the growth in the market demand. However, there was a significant decline in weighted average sales realisation for all grades of the subject goods by approximately 12.14% in the POI.

**(F) Net Sales Realisation and landed value :-**

|  | Rs/Kg   |         |         |               |
|--|---------|---------|---------|---------------|
|  | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | POI<br>(Ann.) |
| Wt. avg. net sales realisation         |         |         |         |               |
| Grey                                   | ***     | ***     | ***     | ***           |
| Dipped                                 | ***     | ***     | ***     | ***           |
| CTC                                    | ***     | ***     | ***     | ***           |
| Weighted Average                       | ***     | ***     | ***     | ***           |
| Weighted Average (indexed)             | 100     | 100.64  | 85.79   | 87.86         |
| Landed value indexed<br>(as per DGCIS) |         |         |         | China         |
| Grey                                   |         |         |         | 95.85         |
| Dipped                                 |         |         |         | 104.42        |
| CTC                                    |         |         |         | 111.65        |
| Wt. avg.                               |         |         |         | 100           |

52. The Authority observes that the landed price of imports from China were significantly lower than the selling prices of the domestic industry. The imports from China were thus significantly undercutting the prices of the domestic industry. It is also observed that the undercutting is present in all the three forms of the product. Thus, undercutting is found on average basis as also for different types of NTCF, grey, dipped and CTC.

**(G) Sales realisation and landed price of imports :-**

| Year      | Wt. Avg. Net Sales Realisation of domestic industry (Indexed ) (Rs/kg) | Landed Price of Imports (indexed) |        | Rs/kg |
|-----------|--|-----------------------------------|--------|-------|
|           |  | China PR                          | Others |       |
| 1999-00   | 100  | 100                               | 100    |       |
| 2000-01   | 100.64   | 93.67                             | 113.84 |       |
| 2001-02   | 85.79  | 99.37                             | 96.04  |       |
| POI (Ann) | 87.86  | 83.38                             | 88.35  |       |

53. The decline in weighted average landed prices of the subject goods from China PR have been by about 16.61% as compared to the base year 1999-2000. The Authority also observes that the imports from China were undercutting the prices of the domestic industry throughout the injury period. It is also observed that the landed prices of imports from Other Countries were higher than the import prices from China.

**(H) Price undercutting from China vis-à-vis other countries:-**

54. The analysis is as follows:

| Year       | Price undercutting (%) |          |
|------------|------------------------|----------|
|            | China PR               | Others   |
| 1999-00    | 1.31%                  | - 0.30%  |
| 2000-01    | 8.14%                  | - 13.45% |
| 2001-02    | -14.31%                | -12.28%  |
| (POI annl) | 6.34%                  | -0.85%   |

**(I) Price Undercutting/ Underselling :-**

55. The Authority notes that during the POI, the weighted average under selling was 18.51% and weighted average under cutting was 6.34%. The price undercutting for various types was in the range of 10-16% (indexed) and price underselling was in the range of 10% - 13.26 % (indexed).

**(J) Profitability:-**

56. The table below shows that the indexed cost of production (wt. avg. for all grades) declined in the POI as compared to the base year by about 9.78%. The Authority has analysed that this was largely due to decline in the weighted average domestic selling prices of Caprolactum for the same injury analysis period. The selling prices declined by about 12.14% in the POI as compared to 1999-00. Despite declining in COP, due to lower sales realisation, the weighted average loss per Kg increased by 29.75% in POI.

|                                     | 1999-00 | 2000-01 | 2001-02 | POI (annl.) |
|-------------------------------------|---------|---------|---------|-------------|
| <b>Cost of Production</b>           | 100     | 100.30  | 87.42   | 90.22       |
| <b>Selling price</b>                | 100     | 100.64  | 85.79   | 87.86       |
| <b>Profit &amp; loss (wt. avg.)</b> | 100     | 94.62   | 114.83  | 129.75      |

**(K) Closing Stocks of Domestic Industry:-**

Qty: MT

|  | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02 | POI      |
|--|-----------|---------|---------|----------|
| <b>Grey</b>                                | 320.61    | 1365.77 | 1159.17 | 1116.44  |
| <b>Dipped</b>                              | 184.60    | 216.75  | 175.41  | 123.25   |
| <b>CTC</b>                                 | 0         | 182.77  | 143.54  | 191.241  |
| <b>Closing Stocks of domestic industry</b> | 505.21    | 1765.29 | 1478.12 | 1430.931 |

57. Closing stocks have been compared with the sales quantum of the domestic industry and indicated as a percentage thereof in the table below:

|              | 1999-2000 | 2000-01 | 2001-02  | POI (annl.) |
|--------------|-----------|---------|----------|-------------|
| <b>Sales</b> | 46988     | 41285   | 47318.55 | 55507       |

|   |      |      |      |      |
|---|------|------|------|------|
| <b>Closing Stocks</b>                     | 506  | 1766 | 1478 | 1431 |
| <b>Inventory as a percentage of sales</b> | 1.08 | 4.28 | 3.12 | 2.58 |

58. It may be seen that though Closing Stocks increased in absolute term, however as a % of Sales, the increase is marginal.

**(L) Return on Investments**

|                                   | <b>Rs. Lacs</b> |                |                |            |
|-----------------------------------|-----------------|----------------|----------------|------------|
| <b>Indexed</b>                    | <b>1999-00</b>  | <b>2000-01</b> | <b>2001-02</b> | <b>POI</b> |
| <b>Capital Employed</b>           | 100.00          | 107.60         | 103.13         | 90.16      |
| <b>Profit/Loss</b>                | -100.00         | -104.10        | -111.86        | -221.32    |
| <b>Return on Capital Employed</b> | -8.98%          | -8.69%         | -9.74%         | -22.05%    |

59. Return on investment follows the same trend as that of profits and cash flow. IT was noticed that knowing the demand supply gap, domestic industry added further capacity. Domestic industry expected higher profits with higher investments. However, profits decline rather than increasing as a result of dumping from China. This resulted in deterioration in the return on capital employed.

**(M) Cash Flow/Profit**

|                  | <b>Rs. lacs</b>  |                |                |            |                  |
|------------------|------------------|----------------|----------------|------------|------------------|
| <b>Indexed</b>   | <b>1999-2000</b> | <b>2000-01</b> | <b>2001-02</b> | <b>POI</b> | <b>POI (Ann)</b> |
| Profit/loss      | -100.00          | -104.10        | -111.86        | -221.32    | -177.07          |
| Depreciation     | 100              | 96.44          | 95.24          | 129.04     | 103.25           |
| Cash profit/loss | -100.00          | -116.62        | -171.98        | -372.86    | -298.29          |

60. Profitability of the domestic industry deteriorated. In the previously concluded mid – term review, it was found that the profitability of the domestic industry deteriorated. The profitability has further deteriorated thereafter.
61. Since all the companies are multi product companies, it would not be feasible to determine cash flow for the product under consideration only. However, cash profit has been determined, which is for the product under consideration only. Cash profit follows the same trend as that of profits. It should also be noted that the Authority had found in the previously concluded mid term review that the profitability and hence cash profits of the domestic industry deteriorated. The profitability and therefore cash profit of the domestic industry has further deteriorated thereafter.

**(N) Employment and Wages**

| <b>Indexed</b>             | <b>1999-2000</b> | <b>2000-01</b> | <b>2001-02</b> | <b>POI</b> | <b>POI (annl.)</b> |
|----------------------------|------------------|----------------|----------------|------------|--------------------|
| <b>Employment (in no.)</b> | 100              | 98.19          | 98.50          | 98.74      | 98.74              |
| <b>Wages (Rs. Lacs)</b>    | 100              | 102.09         | 119.46         | 116.89     | 129.50             |

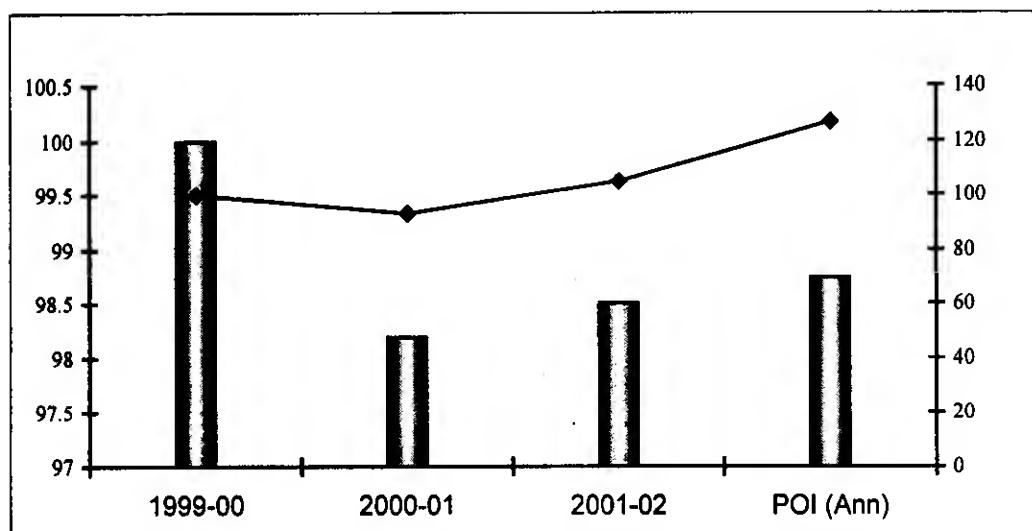
62. Increase in capacity by 15.07% should suggest higher employment. The domestic industry has however reduced employment after increase in capacity. Wages show

an increase of about 29.47% in three years (from 1999-2000 to the POI) which means an average increase of less than 10%. The authority considers such wage increase as normal wage increase not attributing losses to domestic industry. Even when wages have increased, productivity has also increased. Wage per kg of production increased only by Rs \*\*\* and constituted approximately 0.3% of the total cost of production of grey fabric. However selling prices declined by about 14.39% in the POI as compared to 1999-00.

#### (O) Productivity

|   | 1999-2000    | 2000-01      | 2001-02      | POI (Ann.)   |
|---|--------------|--------------|--------------|--------------|
| <b>Total production</b>                       | <b>45988</b> | <b>42062</b> | <b>47478</b> | <b>57620</b> |
| <b>Production per Employee (MT) (Indexed)</b> | 100          | 93.16        | 104.85       | 126.91       |

63. This has been projected in the following graph:



64. The above graph indicates that productivity per employee has increased over the years which is indicated in increased production and sales volumes due to the efforts made by domestic industry to optimize production and reduce employment. However, in spite of increased productivity, the financial performance of the domestic industry in terms of profits has deteriorated and the applicants have incurred losses.

#### L. CONCLUSION ON INJURY

65. The Authority notes that the imports of the subject goods from China PR have increased in absolute terms and relative to production and consumption in India. While imports was less than 100 MT in 1999-2000, the same increased to almost 500 MT in the period April, 03 – June, 03.
66. Whereas the market share of imports from China PR in demand in India increased, the market share of domestic industry declined. Even though the decline in the market

share of the domestic industry was marginal, it is vital to note that the domestic industry was in the process of recovering from past effects of dumping. Foreseeing increase in demand the domestic industry had enhanced its capacity but could not utilize it fully. Thus, while the domestic industry attempted to gain the market share lost to other countries (who were earlier resorting to dumping), the said share was taken away by dumped imports from China. Moreover, the domestic industry's decline in share of demand has to be viewed in the context of overall increase in demand levels.

67. Share of imports from China PR in total imports to India steeply increased whereas that of other countries declined. At the same time, the prices from China were significantly lower than prices from other countries. The period earlier investigated for this product was 2000-2001. Between 2000-2001 and present investigation period, the share of China has further increased while that of other countries has proportionately declined.
68. Sales of the domestic industry increased over the injury period. However, while the increase in demand was 19.77%, increase in the sales of the domestic industry was 18.13%. Thus, sales of the domestic industry increased less than increase in demand. It is also found that while grey NTCF sales of the domestic industry increased only by 15%, the dipped sales increased by 78%. Thus, increase in the sales of the domestic industry was more in dipped category, which appears to be due to imposition of Anti Dumping Duty on other countries. Sales of cycle tyre cord (CTC) declined even though the domestic industry had significant unutilized capacity. This is directly due to dumped imports from China PR.
69. Even when the sales of the domestic industry on overall basis have increased, it is found that the sales in the last quarter of POI were less than prorata sales in 2002-2003. At the same time, as per Chinese Customs imports from China in this period rose sharply from 5585 MT in 2002-2003 to 2387 MT in April, 2003-June, 2003. This clearly shows that sales of the domestic industry are likely to decline if the imports from China continue to undercut the prices of the domestic industry in the market. The Authority has also seen that in the last quarter of POI and after POI, average imports from China per month is approximately 1000 MT.
70. Imports of the product have significantly undercut the prices of the domestic industry in the market. It is argued by the domestic industry that the prices paid by the consumers are always benchmarked on the basis of imports. While imports from other countries were earlier benchmarking the prices of the domestic industry, imports from China at even lower prices started undercutting the prices of the domestic industry.
71. The price undercutting was determined cumulatively for the entire period. However, undercutting has been determined separately for the three types of the product involved (grey, dipped and CTC) and it was found that the price undercutting in the range of 10-16 % (indexed) was present. In fact, it was found that price undercutting was higher in case of CTC, which directly correlates with the decline in the CTC sales volumes and consequently CTC production and capacity utilization.

72. Price underselling has been determined by comparing non injurious price established with the landed price of imports. The comparison was done first for the three types of the product and thereafter on weighted average basis. It is found that the landed price of imports is significantly below the non injurious price established. Thus, the imports are forcing the domestic industry to undersell the product significantly in the domestic market.
73. Profitability of the domestic industry has deteriorated. It is also to be noted that in the previous investigations relating to this product (wherein the investigation period was 2000-01), it was found by the Authority that the domestic industry had suffered material injury (even though no anti dumping duty was recommended, holding that causal link was not established, given lower price of imports from China PR). The profitability of the domestic industry has declined further after that investigation period. It is also noted that the domestic industry, in the meantime, has increased its production and sales. This should have helped the domestic industry in curtailing per unit overhead costs and in improving its profitability.
74. Production of the domestic industry increased over the injury analysis period. It is found that the increase in production was more than increase in sales volumes. Resultantly, the domestic industry was not able to sell entire increased production, leading though to marginal increase in inventories. Domestic industry effected increase in production, given rising demand of the subject goods in the country, by enhancing its capacity, which has helped the domestic industry in significantly reducing the incidence of overhead costs. However, such efforts of the domestic industry to reduce incidence of its overhead costs did not help the industry in improving its profitability. Profitability, on the contrary, declined.
75. Capacity utilization of the domestic industry improved over the injury analysis period. This has to be seen in the context of previous dumping from different countries and consequent imposition of Anti Dumping Duty. However, whereas capacity increased by 15.07%, capacity utilization increased only by 8.9%. Further, the demand increased by 19.77%. Thus, the increase in capacity utilization was sub-optimal and domestic industry had unutilized capacity.
76. Wages per unit of production have increased by 4.2%, while total wages paid increased by 29.49%. The Authority notes that 29.49% wage increase in a period of about three years appeared normal wage increase. In normal circumstances, the cost of production of the domestic industry on account of wages should have proportionately increased. Thus, had the domestic industry not increased its production, its unit cost of production would have increased by about Rs. \*\*\*per kg. on account of increase in wages alone. However, the wages increased only by about Rs. \*\*\*per kg., as the domestic industry was able to absorb the wage increase on higher production. Resultantly, the profitability of the domestic industry should have increased by about \*\*\*Rs./Kg., thus resulting in higher profits by about Rs. 4.57 crores. However, in spite of such efforts by the domestic industry, the profitability rather declined. This is clearly due to price effect the imports have had on the domestic industry prices in the market.

77. The Authority notes that the employment level with the domestic industry declined. This is in spite of addition of capacity and higher production. It is found that had the domestic industry not reduced its employment level, it would have paid higher wages by about Rs. 24.59 lacs (Rs. \*\*\*lacs as against Rs. \*\*\*lacs actually paid). Thus, the domestic industry should have improved its profitability by this amount, whereas its profitability deteriorated due to price effect the imports have had on the domestic industry.
78. Reduction in employment on one hand and increase in production on the other hand significantly helped the domestic industry in improving its productivity. However, in spite of such increase in productivity, the profitability of the domestic industry deteriorated. Had the domestic industry maintained the same level of productivity per employee as it had in 1999-2000, it is found that the domestic industry would have employed about 2065 persons. This would have resulted in higher wages by Rs. 4.96 crores. Thus, improvement in productivity should have increased the profits of the domestic industry by Rs. 4.96 crores. However, the profitability rather declined due to price effect the imports have had on the domestic industry.
79. Cash profits has followed the same trend as that of profitability. It is noted that the NTCF industry is fairly old in the country. The depreciation cost of the domestic industry is much lower. Therefore, any deterioration in profitability is likely to result to cash losses situation to the domestic industry. In fact, it is found that the domestic industry has been forced to a situation of deteriorating cash losses.
80. Return on investment from production and sale of NTCF for the domestic industry have been negative. It is found that whereas the production has increased, capital employed has declined. This should have enabled the industry to earn better returns on the capital employed. However, return on capital employed deteriorated instead of improving.
81. In view of the foregoing it is observed that:-
- (a) the quantum of imports from the subject country has increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India;
  - (b) the market share of the applicants has gone down while that of dumped imports has increased;
  - (c) the applicants have been forced to sell at prices below their non-injurious price.

#### **M. CAUSAL LINK**

82. In accordance with the Principles for Determination of Injury set out in Annexure II (v) of the Anti-Dumping Rules, the Authority examined whether material injury has been caused to the domestic industry by dumped imports. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time be injuring the domestic industry were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors were not attributed to the dumped imports.

Effects of the dumped imports

83. The significant increase in the volume of the dumped imports between 1999-00 and the period of investigation and of its corresponding share of domestic demand from 1.62% to 6.40% as well as the price undercutting found (around 6.34% on average basis during the POI) coincided with the deterioration of the economic situation of the domestic industry. In examining the price effect, it is seen that the cif and landed values have further declined significantly in the POI. The domestic industry experienced a deterioration of profitability that has to be seen in the background of growing demand in the injury analysis period and the POI. Dumped imports exerted a downward pressure on domestic industry's selling prices which resulted in a drop in prices (by 12.14%) in a situation where the production costs declined by about 9.78%.
84. The Authority notes that import prices from the subject country have undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its non-injurious price which resultantly, the domestic industry was unable to recover from. The impact of dumped imports on the various economic indices of the domestic industry has been examined in the section on Injury in these findings. It is therefore provisionally considered that the material injury to the domestic industry was caused by the negative impact of dumped imports from the subject country.

Effects of Other Factors

85. In the examination of any known factors other than the dumped imports which at the same time, may be injuring the domestic industry, the Authority has examined import volumes and prices of the subject goods from other third countries. According to the available information, the total import volume of the like product originating in third countries other than China PR increased from around 15632 MT in 1999-2000 to around 15835 MT in the POI and their share in total imports decreased from 93.89 % in 1999-2000 to 76.45 % in the POI. The share of imports from third countries in demand decreased from 24.56% in 1999-2000 to 20.78% in the POI. The weighted average landed prices of these imports remained substantially higher than prices from the subject country in the period of investigation and caused negative price undercutting.
86. It appeared that as per DGC&IS, imports originating in Chinese Taipei, Thailand, Czech republic and Korea RP had a share of more than 3% in total import volumes. However the landed values of the subject goods from Czech Rep and Chinese Taipei were above the prices of the domestic industry and were significantly higher than the landed prices from China PR. The CIF prices in respect of Korea RP and Thailand were found to be lower. The authority has examined this issue.
87. At the time of mid term review investigations for the same product, it was found that the imports from China were at prices lower than other countries under investigation at that time (Korea, Indonesia, Taiwan and Thailand). It was also found that the landed price of imports from those countries were higher than the landed price of imports from China and the sales realisation of the domestic industry. Therefore, it

was concluded in those proceedings by the designated authority that there was no causal link between the dumped imports and injury to the domestic industry.

88. In the present investigation period, it would appear from the published DGCI&S data as also application filed by the domestic industry that the import price from Thailand are lower than the imported price from China. The Authority procured and examined in detail transaction wise import data provided by the DGCI&S. The analysis was also done based on IBIS data. It is found that imports from Thailand were mainly of dipped category. Comparing the average import price in the relevant period from Thailand was Rs. 132 per Kg, while the same was Rs. 126 per Kg. from China.
89. The information provided by the applicants was also examined in detail. It would appeared from the summary statement provided by the applicants that the import price from Thailand was lower than the import price from China. However, it is found that the import price from China mentioned by the petitioner included imports of CTC which is a different category. Once imports of CTC are segregated from this information, it is found that the average import price from China is lower than the import price from Thailand.
90. Comparison of transaction wise import data provided in the DGCI&S with the transaction wise import data provided by the petitioner (compiled by secondary sources) shows almost the same import price from Thailand. It is thus evident that the import price from China was lower than the import price from Thailand.
91. In respect of Korea RP, the authority notes that the volume of imports from Korea has continually declined throughout the injury period. As per DGC&IS and IBIS data, there have been no imports from Korea during the quarter April-June 2003. The exports from Korea were almost nil after September 2002, however the imports again started in the month of Feb 2003 onwards. During this period, however the prices were higher than that of China. Due to imports in the beginning of the investigation period, the average price for POI as whole is lower. The transaction wise analysis shows that imports in the period of April-Sep 2002 were made by M/s Apollo and reflect apparent exports under one contract and one price. It appears these exports were effected due to some past contractual obligations. Imports made by other users were at comparatively higher prices.
92. Therefore the Authority notes that the volume of imports of NTCF from other countries are either de-minimis or the prices are significantly higher. The technology adopted by the domestic industry which involves the processes of polymerisation, spinning, twisting, weaving and dipping, is comparable to the technology used elsewhere in the world for the production of the subject goods. The domestic industry has no export sales of the subject goods. No other factors are reported to have caused material injury to the domestic industry.
93. There is no contraction in demand of NTCF in India which could have contributed to any injury to the domestic industry. In fact demand has increased. The imports from China PR have increased in absolute terms and relative to production and

consumption in India. While the domestic industry's share in demand has declined, the share of dumped imports has increased.

#### N. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

94. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market.
95. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of NTCF. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore would not affect the availability of the product to the consumers.
96. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of NTCF in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

#### O. LANDED VALUE

97. The landed value of imports is determined on the basis of export price of NTCF determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent landing charges.

#### P. CONCLUSIONS

98. It is seen after considering the foregoing that:

- (a) NTCF of all types described under para C 6 originating in or exported from China PR has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered material injury;
- (c) material injury has been caused by dumped imports from the subject country.

99. It is decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less which if levied, would remove the material injury to the domestic industry. Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on NTCF of all types originating in or exported from China PR, falling under customs sub-heading no. 5902.10 of Chapter 59 of the Customs Tariff Act

1975 and 5902.10.00 of the ITC (HS) Code pending final determination. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Col. 9.

| Sl.<br>No | Sub-<br>Heading<br>Or<br>Tariff<br>Item | Description<br>of<br>Goods | Country of<br>Origin                     | Country<br>of<br>Export                        | Producer | Exporter | Amount | Unit of<br>Measure-<br>ment | Currency |
|-----------|---|----------------------------|--|--|----------|----------|--------|-----------------------------|----------|
| (1)       | (2)                                     | (3)                        | (5)                                      | (6)  | (7)      | (8)      | (9)    | (10)                        | (11)     |
| 1.        | 5902.10                                 | NTCF                       | China PR                                 | China<br>PR                                    | Any      | Any      | 0.69   | Kg                          | USD      |
| 2.        | 5902.10                                 | NTCF                       | China PR                                 | Any<br>country<br>other<br>than<br>China<br>PR | Any      | Any      | 0.69   | Kg                          | USD      |
| 3.        | 5902.10                                 | NTCF                       | Any<br>country<br>other than<br>China PR | China<br>PR                                    | Any      | Any      | 0.69   | Kg                          | USD      |

#### Q. FURTHER PROCEDURE

100. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:
- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
  - Exporters, importers, applicant and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
  - The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions.
  - The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

A. SENGUPTA, Designated Authority